श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरुओं।

श्रीमति तटवर्ति राज्यलक्ष्मी

श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरुओं।

लेखक : तटवर्ति राज्यलक्ष्मी

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वराव

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.70/-

सूची

1. श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरुओं। 3

2. गुरु के प्रति, एक शिष्य का व्यवहार कैसे होना चाहिए ? 26

3. मानव को देवता बनना है तो ? 36

4. अगर विशेष ज्ञान प्राप्त करना है तो? 42

5. मानव को आचरण करने वाले कुछ धर्मो! 46

6. 'अज्ञानियों के प्रकारों' । 53

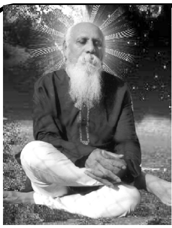

ध्यान की विधि सांस पर ध्यान

जिस किसी को जो कोई आरामदायक आसान हो उसमें आराम से बैठकर... दोनों हाथों को जोड़कर... दोनों आंखों को बंद करके... प्राकृतिक रूप से होने वाला सांस लेना और छोड़ने की प्रक्रिया का अवलोकन करना चाहिए!

बीच-बीच में अनेकानेक सोच मन में आते हैं उन्हें वहीं के वहीं कटौती करके... फिर से बार-बार सांस पर ही ध्यान ले जाते रहना चाहिए... धीरे-धीरे निर्विचार की स्थिति मिलती है.... चित्त वृत्तों का निरोध होगा... मन निर्विषय, शून्य हो जाएगा। मन को शांति मिलेगा। यही ध्यान की अवस्था है।

इस निर्विचार अवस्था में होने वाले अनेकानेक शारीरिक, नाड़ी मंडल, आत्मा अनुभवों का अवलोकन करना चाहिए। इस स्थिति में ब्र्मांडीय प्राण शक्ति अत्यधिक मात्रा से शरीर में प्रवेश करके नाड़ी मंडल को शुद्ध करता है। उस ऊर्जा के कारण बीमारियां कम हो जाते हैं। नाड़ी मंडल शुद्ध होने के कारण कर्मो का नाश होते हैं।

हर दिन अपने उम्र के हिसाब से... जितना उम्र हो कम से कम उतने मिनट... जरूर... दिन में दो बार... ध्यान करना चाहिए।

श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरुओं।

श्री दत्तात्रेय जी अत्रि महामुनि और अनसूया दंपती, का ब्र्मा विष्णु ईश्वर इन तीनों का अंश से जन्म हुआ है। सब लोग श्री दत्तात्रेय जी को अवधूत मानते हैं।

श्री दत्तात्रेय जी ने प्रकृति से 24 गुरुओं को चुना था। वह उनसे सीख कर एक ज्ञान का भंडार की तरह हो गया है।

एक बार जब वह ऐसा जा रहा था, यदु महाराज उन्हें देखकर अपने मन में सोचता है कि यह इतना ज्ञान भंडार दिख रहा है, आनंद स्वरूप दिख रहा है। यह कौन है ? और उसके पास जाकर पूछते हैं कि आप इतने आनंद स्वरूप दिख रहा है, एक ज्ञान भंडार दिख रहे हैं। इतना आनंद और ज्ञान आप कैसे प्राप्त किए हैं ? हम सब धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में सिर्फ काम और अर्थ के पीछे पड़े हैं। संपत्ति में ही सुख समझकर, पत्नी और पुत्रों में ही आनंद है समझकर, सिर्फ उन्हीं के लिए चिंतित रहकर उन्ही के लिए भाग दौड़ कर रहे हैं। आपका कोई संसार या पत्नी या पुत्रों नहीं दिख रहा है। फिर भी आप इतने आनंदित कैसे दिख रहे हैं ? ऐसे पूछे थे श्री दत्तात्रेय स्वामी से ।

जब यदु महाराज पूछे थे, तब श्री दत्तात्रेय स्वामी ने प्रकृति में अपना 24 गुरुओं के बारे में विवरण दिया था। इन दोनों का संवाद, श्री कृष्ण का बोध किया उद्धव गीता, में से जान सकते हैं।

इसमें दत्तात्रेय कैसे जन्म हुए हैं? और उन गुरुओं को कैसे चुना ? और उनसे क्या ज्ञान प्राप्त किया है? और ज्ञान भंडार कैसे बना। इन विषयों को जान सकते हैं।

दत्तात्रेय जी ने क्या कहा? मैंने किसी से कुछ नहीं सीखा, प्रकृति को देखकर उससे बहुत विषयों सीखा हूं। मैंने 24 गुरु को चुना हूं ।

मुझे कैसे रहना चाहिए? क्या छोड़ना चाहिए ? क्या प्राप्त करना है? यह सब प्रकृति से सीखा हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

इसलिए अब हम जानते हैं, वह गुरुओं कौन है?

श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि पांच भूतों उनका पहले गुरु है। मतलब भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश । इन पांचों को पहले गुरुओं को चुना है। वह पांच भूतों से बहुत कुछ सीखा है। पहले वह पांच भूतों में भूमि से क्या सीखा है अभी जानते हैं।

1) भूमि।

श्री दत्तात्रेय जी ने कहा है कि वह भूमि से सहनशीलता सीखा था। देखिए आप जो कुछ भी करो, भूमि सहनशीलता में ही रहती है। भूमि का सहनशीलता जितना है, वह किसी में भी नहीं है। इसलिए अगर कोई सहनशीलता दिखाते हैं हम उन्हें कहते हैं कि वह भूमि के तरह सहनशीलता में है। इसलिए कहते हैं कि भूमि , सहनशीलता और सबर का प्रतीक हैं।

वह भूमि से सीखा हुआ सहनशीलता से.... उसने कहा है कि, वह पिछले जन्मों का कोई भी प्रारब्ध कर्मों को, कैसे भी हो, कितना भी कष्ट क्यों ना हो, मैं सबर रखूंगा। देखिए एक रमण महर्षि ने, या श्री रामकृष्ण परमहंस, उतना भयंकर कैंसर रोग आने पर भी, उसके बारे में ना सोचकर उसको सहनाया है।

क्योंकि जब भी प्रारब्ध आता है, उन्हें मालूम है कि, उन्हें जरूर अनुभव करना है, इसलिए वह लोग सहनशीलता दिखाये हैं। इसलिए दत्तात्रेय जी का कहना हैं कि प्रारब्ध कर्मों के वजह का कोई भी कष्ट को सहनना, भूमि से सीखा हूं।

यही नहीं, भूमि से पर्वत और बड़े-बड़े वृक्षों भी उत्पन्न हुए हैं, पर्वतों को देखकर वह स्थिरता सीखा है, क्योंकि आंधी हो या तूफान हो या सुनामी हो या भूकंप, पर्वत अचल रहते हैं। श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि उनको देखकर अचलता सीखा हूं। सामान्य बात यही है की छोटी-छोटी बातों पर निराश होना या थोड़ा सा भोगने पर,अपने आप में गर्व से उभरते हैं, लेकिन पर्वतों ऐसे नहीं करते हैं।

2) जल।

श्री दत्तात्रेय जी ने जल से शुद्धता सीखा है। देखिए, संसार में बहुत प्रकार के गंदगी और प्रदूषण होते हैं। लेकिन उनको जल से या पानी से साफ करते हैं। उसे वह अपवित्र से पवित्र बन जाते हैं और शुद्ध हो जाते हैं।

देखिए पानी से विग्रहों को अभिषेक करते हैं, सफाई करते हैं। मंदिर और उसके परिसर को भी पानी से ही साफ करते हैं।

देखिए मानव भी अपने घर को, शरीर को, कपड़े को, पानी से ही सफाई करते हैं। अगर पानी नहीं होगा तब ना सफाई कर सकते हैं ना ही जी सकते हैं। न केवल मानव, दूसरे जीवों भी सफाई और पीने के लिए पानी उपयोग करते हैं। अगर पानी नहीं है तब जीव खत्म हो जाता है। और सबका आहार, वृक्ष जाती भी खत्म होंगे अगर पानी नहीं है तो। इसलिए पानी,जीवन के लिए इतनी उपयोगी है। ऐसे हम, पानी से सीख सकते हैं कि निरुपयोग चीजों को उपयोग में लाना कैसे?

श्री दत्तात्रेय जी भी पानी की तरह अपने पास आने वाले शिष्यों की अज्ञानता का गंदगी को निकाल कर, ज्ञान से पवित्र करते हैं। श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि यह विषय पानी को देखकर सीखा हूं।

इसी प्रकार योगियों भी, जो भी उनके पास आते हैं, उनको ध्यान के द्वारा अज्ञानता का अंधकार से ज्ञान का प्रकाश देते हैं। पत्री जी ने भी वही किया है। मैं और मेरा पति भी वही कर रहे हैं।

3) अग्नि।

देखिए, अग्नि अच्छे और बुरे, सबको जलाकर भस्म करती है।

जैसे अग्नि, बिना भेदभाव सबको भस्म कर देती है! वैसे ही एक ध्यान योगी अपने कष्टों और सुखों को समानता से स्वीकारता है। श्री दत्तात्रेय जी भी सबको अग्नि कि तरह, बिना भेदभाव अच्छा या बुरा, दोनों को स्वीकारता है, श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि ऐसे ही मैं भी अग्नि की तरह सबको समदृष्टि से देखता हूं ।

अग्नि को प्रत्येक रूप नहीं है। जिस आकार में प्रवेश करती है, उसी का रूप लेती है। लकड़ी में प्रवेश कर कर उसी का रूप लेती है। अगर छड़ी जलता है लंबा दिखती है, टोकरी जलने से गोल दिखती है। इसी प्रकार जिसमें अग्नि प्रवेश करती है, उसी का रूप लेती है। उसका कोई प्रत्येक रूप नहीं है।

इसी प्रकार आत्मा का भी कोई प्रत्येक रूप नहीं है। जिस शरीर में प्रवेश करता है वही उनका रूप है।

इसलिए श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि, सबके अंदर आत्मा एक ही है, का विषय, अग्नि से सीखा हूं।

4) वायु ।

वायु दो प्रकार का होता है। 1. अंतर वायु , 2. बाहर वायु।

अंतर वायु प्राणशक्ति के रूप में शरीर में होती है। जब तक प्राण शक्ति रहती है तब तक मानव जीता है। अगर प्राण शक्ति नहीं रहती है तब शरीर शव बन जाता है। मानव लोग, जंतु जानवर और आदि जीव राशि, सब शव बन जाएंगे।

बाहर वायु मतलब जो बाहर का वायु। वायु का लक्षण यही है कि वह किसी को भी अपने साथ ले जा सकती है। देखिए बाहर वायु दुर्गंध और सुगंध को भी लेकर जाती है। इसलिए जब गंदगी के पास जाते हैं तब वहां दुर्गंध आता है, मतलब दुर्गंध वायु आई है।

इसी प्रकार जब हम सुगंध प्रदेशों में, जैसे फूलों के बगीचे में, गुलाब या आदि, उनमें सुगंध को भी साथ लेकर जाती हैं। वहां सुगंध का महक आता है। इसीलिए कहते हैं कि वायु सुगंध और दुर्गंध को एक जैसे स्वीकारता है।

इसी प्रकार एक ज्ञानी द्वंदों में, मतलब मान - अपमान, ठंडा - गरम में, सुख-दुख में, हार - जीत में, निंदा - स्तुति में, समान रहता है। एक ही प्रकार स्वीकारता है। श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि यह विषय वायु से सीखा हूं ।

5) आकाश।

आकाश हर जगह व्यापक है। जहां भी खाली है वहां आकाश है। लेकिन उनका महत्व यही है कि वह हर जगह रहती है, फिर भी किसी से चिपकता नहीं है।

देखिए कोई प्रदेश नहीं है जहां परमात्मा नहीं है। लेकिन मिलता है क्या? मतलब पकड़ नहीं पाते हैं, मिलेगा नहीं, जैसे आकाश। श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि मैं भी आकाश को देखकर परमात्मा के बारे में जाना हूं ।

इसे जान सकते हैं कि श्री दत्तात्रेय जी कितने सूक्ष्म दृष्टि से सब चीज को देखते हैं । वह पांच भूतों, भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, को अवलोकन करके पांच पाठों सीखे हैं।

6) चंद्रमा।

चंद्रमा का कलाएं कम होते रहते हैं, और बढ़ते भी रहते हैं। उन्हीं को अमावस्या और पूर्णिमा कहते हैं। इसी प्रकार हर एक जीव का शरीर पहले बढ़ता है, बाद में निर्वीर्य होकर, जैसे चंद्रमा का कलाएं की तरह, धीरे-धीरे घटता रहता हैं। मतलब कुछ भी शाश्वत नहीं है। मतलब जो कुछ भी है सृजन हुआ है हर एक चीज नष्ट होना ही है। श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि यह विषय मैंने चंद्रमा से जाना हूं।

7) सूरज।

सूरज सबको प्रकाश देता है, गर्मी देता है, पानी को भाप बनकर बारिश बरसता है। ऐसे कर कर खुद घमंड नहीं दिखाता है। कतृत्व भाव नहीं रहकर करता है, मतलब मैं कर रहा हूं का भाव नहीं रखता है।

बारिश से कितने फायदे हैं, बताइए। इसी प्रकार सूर्य प्रकाश में बहुत लोग काम करते रहते हैं। लेकिन इन सब आनंदित होने का कारण मैं हूं का गर्व से नहीं उभरता है। अच्छे और बुरे लोगों को समानता से ही बांटता है, साक्षी भूत रहकर देखता रहता है।

इसी प्रकार सबको अच्छाई कर कर, मैं करता हूं का भाव नहीं रखना, यह विषय सूर्य से सीखा हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

जैसे कई गमले में पानी है। सूर्य हर एक गमले में एक ही प्रकार दिखता है। कारण वह एक ही है। इसी प्रकार परमात्मा भी एक ही है। अलग अलग शरीर में रहकर अलग-अलग दिखता है।

ऐसे ही अलग-अलग रहने पर भी सबके अंदर परमात्मा एक ही है।

जबकि शरीर अलग अलग है, परमात्मा का विभाजन नहीं हुआ है, का विषय सूर्य से जानना है हम सबको, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

मानव लोग, सारे जीव राशि, सूर्य की रोशनी में कितने कार्यक्रमों कर रहे हैं। फिर भी वह कभी नहीं कहते हैं कि वह सब मेरे वजह ही हो रहा है। साधारण बात यही है कि कोई भी छोटा सा ही काम क्यों ना करें अपने आप को बड़ा महान समझता है।

लेकिन सूर्य कभी भी, कितने सारे कार्यों होने पर भी, साक्षी रहकर देखा है। लेकिन कभी कर्तृत्व भाव से नहीं होता है। इसी प्रकार, श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि, मैं भी सूर्य की तरह रहना है, यह विषय मैंने सूर्य से सीखा हूं।

8) हाथी।

जब हाथी को पकड़ना है, महुत एक जाल लगाकर, एक हथिनी से चिलवाता है, या चिल्लाने पर मजबूर करता है। उस को हाथी सुनते ही, भागते हुए इस जाल में फंस जाता है। और अपाय में आता है। इसलिए कभी भी मुझे एक स्त्री को नहीं देखना, या आकषर्णिय स्त्री को देखना नहीं चाहिए, यह बात सीखा हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी ने ।

शारीरिक स्पर्श से आकर्षित होकर हाथी फस गया है। इसलिए लोग कहते हैं कि, जब कोई भी पांच इंद्रियों में से स्पर्श के लिए लोग नष्ट हो जाते हैं, वह यही उदाहरण देते हैं। इसलिए महूत भी हथिनी से चिलवाता था ताकि वह हाथी उस जाल में फस जाए।

इसलिए मुझे भौतिक आकषर्णीय में नहीं पढ़ना है, मेरा ज्ञान नहीं बढ़ेगा, यह मुझे समझ आया है, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

9) मधुमक्खी ।

मधुमक्खियां जितना भी मधु को मधुकोश में इकट्ठा करें, वह खुद पीते नहीं है और किसी और का हो जाती है। इतना कष्ट कर कर किसी का फल और किसी का हो गया है।

इसलिए धन को जितना भी इकट्ठा करो, अगर वह निरुपयोग है मतलब अपने जरूरत के बाद दूसरों को नहीं बाटते हो या लोक कल्याण के

लिए नहीं उपयोग करने पर, तब वह धन किसी और का वश में हो जाता है। इसीलिए धन संपत्ति पर, भोगों पर, आशा नहीं होना चाहिए, मधुमक्खी की जीवन जैसे, नहीं होना चाहिए। यह बात मैंने मधुमक्खी से सीखा हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

10) टिड्डी ।

एक टिड्डी दीपक का प्रकाश देखकर, फल समझ कर, आकर्षित होती है। उस दीपक के पास जाकर उसमें गिरकर मर जाती है। इसलिए अगर हम सुंदर वस्तुओं को देखकर, आकर्षिनीय वस्तुओं को देखकर, चाहना बढ़ाते हैं तब, बहुत संकट में आ जाते हैं। श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं की इस सच को जाना है।

11) समुद्र ।

समुद्र में सारे नदियां आकर मिल जाते हैं। लेकिन जितने भी नदियां मिले, वह अप्लाव नहीं होता है। गर्मियों में समुद्र का पानी भाप बनकर, बादलों में हो जाते हैं। फिर भी समुद्र घटता नहीं है। मतलब नदियों आकर मिलने से अप्लाव नहीं होता या भाप बनने से घटता नहीं है। इसी तरह जो कुछ आए तब नहीं बहना या जो कुछ जाए तब नहीं उदास होना, यह बात श्री दत्तात्रेय जी ने समुद्र से सीखा है।

वही नहीं, समुद्र कितने जलाचरों को आवास देता है, उनके बढ़ोतरी में सहाय भी करता है। इसी प्रकार आदमी किसी और का बढ़ोतरी के सहायता करना, समुद्र को देखकर सीखा हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

12) अजगर।

अजगर, जो भी कुछ मिला वह खाता है। अगर कुछ नहीं मिला तब वह ढूंढता नहीं है, भूखा रह जाता है। अगर कोई भी जानवर उनके पास आता है, तब वह उसको तुरंत पकड़ता है। ऐसे कोई भी जानवर को हजम करने का शक्ति उनके पास है। लेकिन अजगर, आहार के लिए प्रयत्न नहीं करता है।

इसी प्रकार मैं भी, अगर मिला तो ठीक है, नहीं, तो भी ठीक है। लेकिन आहार के लिए प्रयत्न नहीं करता हूं। अगर आहार मिला तब स्वीकारता

हूं। नहीं तो निराहार रहता हूं। यह विषय अजगर को देखकर मैंने सीखा हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

13) हरिन (हिरण)।

एक हिरन संगीत सुनकर तन्मय होती है। इसीलिए उसको पकड़ने के लिए शिकारी सीटी बजाकर संगीत सुनाता है। हिरन उसको सुनकर तन्मय होकर भागते हुए उसके जाल में फसती है।

इसी प्रकार हमें संगीत में या नृत्य कला में या ऐसी जगहों में मन नहीं लगाना है, अगर उन पर मन लगा तब जो भी ज्ञान पाना है, वह नष्ट हो जाएंगे, यह जाना हूं। अगर ऐसी जगहों पर मन लगाएंगे तब पूरा जन्म को ही नष्ट करना पड़ता है, यह भी जाना हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

देखिए, रुष्य श्रृंगी जी, स्त्री लोगों को देखे बिना परवरिश हुआ था। लेकिन इस स्त्रियों के वजह से ही यह संसार में फंस गए। इसलिए मैं सुंदर स्त्री की तरफ, या संगीत, या नृत्य की तरफ नहीं जाऊंगा और मन को उस तरफ नहीं रखूंगा, मैं उस तरह नहीं देखूंगा, ऐसे कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

14) वेश्या।

वैश्या भी मेरा गुरु है, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी। वेश्या क्या गुरु है! बहुत लोगों में शंका हो सकता है। उनसे क्या सीखना है? कैसे? एक बार जब सुबह-सुबह वह जा रहे थे पिंगला नाम के वेश्या ने आसामियों को इंतजार करते हुए, जब कोई आ नहीं रहा था तब उसने ऐसा कही थी।

मैं आसामियों का इंतजार कर रहा हूं, लेकिन अगर मैं उनके बदले अगर विश्वेश्वर का इंतजार कर रहे होते तब, कब का मुझे मोक्ष मिल जाता था, कहते हुए सुना था श्री दत्तात्रेय जी।

तब उसने सोचा था कि, इस संसार में जितना समय एक सुख और धन संपत्ति कमाई के लिए देते हैं, अगर उतना समय विश्वेश्वर को देते हैं, तब मुझे मोक्ष मिल जाता है। यह विषय उस वेश्या को देखकर मैंने सीखा हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

15) सर्प।

सर्प, जिसमें भी घूमता है, रहता है, वह स्वच्छ और साफ ही रहता है। और कभी भी अपने लिए एक बिल नहीं बनाने का सोचता है। अगर कीचड़ में भी जाएं, उससे चिपकता नहीं है। इसी प्रकार हम भी किसी चीजों से बिना चिपक कर जीना चाहिए और सर्प कभी बिल नहीं बनाता है, वह चीटियां के बिलों में ही रहता है।

इसी प्रकार हम अपने लिए नहीं प्रयत्न कर कर, अगर भगवान के मार्ग में रहते हैं, वही हमारे लिए कोई भी रूप में किसी भी प्रकार हमें घर बनाता है। मुझे घर नहीं है, महल नहीं है, से निराश नहीं होना चाहिए। हमारे अर्हत के हिसाब से मिल जाएगा। उनके बारे में सोचने की जरूरत नहीं है। यह विषय मैंने जाना हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

अगर देखेंगे आजकल दुनिया में सब लोग दिखने वाले भोगों के पीछे पड़े हैं। लेकिन उनके पीछे भागने से दुख ही मिलेगा। कुछ भी नहीं पकड़ने से ही आनंद रहेगा।

श्री दत्तात्रेय जी को देखकर हमें यह समझ आता है। क्योंकि ? उनका तत्व को देखकर हम अपने लिए प्रयत्न नहीं करना और सर्वेश्वर के लिए प्रयत्न करेंगे, तब जो भी आना है वह सब आ ही जाएगा। यही विषय श्री दत्तात्रेय जी ने सीखा है। यही विषय उनसे हमें सीखना है।

16) शिशु।

श्री दत्तात्रेय जी को एक शिशु भी गुरु है। क्योंकि एक शिशु बिना कुछ माया मर्म रहता है। एक शिशु मासूम रहता है। इसलिए हर वक्त हंसता रहता है। एक शिशु के लिए सब एक ही है! कुछ भी माया मर्म नहीं रहता है। किसी के ऊपर राग या द्वेष नहीं होता है। इसलिए कहते हैं कि एक शिशु भगवान समान है।

इसलिए अपने मन में कुछ भी माया मर्म नहीं रखना चाहिए। यह बात मैंने एक शिशु को देखकर सीखा हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

17) मछली।

देखिए, एक मछली अपनी रुचि के लिए एक मछुआ के बंसी में फंसकर मर जाती है। इसलिए कभी जीभ का प्रलोभन में नहीं पढ़ना है का निर्णय लिया हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

इसी प्रकार जब हम हर एक को देखकर जान रहे हैं, एक साधक को कैसे बढ़ना है? कौन से आदतें रखना चाहिए? यह सब हमें अच्छी तरह समझ आता है।

इसलिए कैसे रहने से एक योगी बनेगा? कैसे रहने से महान बनेगा? यह विषय जानना चाहिए। सहज बात है कि अगर अपने आप को महान समझेंगे, तब कुछ भी नहीं सीखेंगे।

18) शिकारी।

कोई भी, जब एक ही विषय पर ध्यान देता है, उसको जरूर पा लेता है। श्री कृष्ण जी मरने से पहले एक समय उद्धव जी आता है। तब उसने पूछा आप जा रहे हैं ना? मुझे कुछ ज्ञान सिखाओ ना? तब श्री कृष्ण जी बहुत विषयों के साथ एक विषय कहा था। अगर आपको, आत्मज्ञान पाना है, तब साधना करते वक्त बहुत केंद्रित करना होगा, कहते हुए उसके लिए एक उदाहरण देता है।

जब बाहर से घर पहुंचते हो आप प्यासी रहते हो। आपकी पत्नी बहुत सारे विषयों बात करती रहती है। लेकिन आपका दृष्टि किस पर होता है? पूरा दृष्टि पानी पीने पर ही रहता है। इसलिए उनका कहने वाले विषयों पर केंद्रित नहीं रहता है।

पानी पीने के बाद फिर से पूछते हो है ना? हां पहले कुछ कह रहे थे, फिर से बताओ, क्योंकि आप केंद्रित होकर नहीं सुने थे। इसीलिए आपको समझ नहीं आया। इसलिए केंद्रित होना मतलब जो कुछ भी हो रहा है, आजू-बाजू में ध्यान न देकर आपको अपने उस विषय पर ही केंद्रित होना।

इसलिए जब हमारा अपना दृष्टि किसी विषय पर केंद्रित है, कुछ और सुनाई नहीं देगा, कारण पूरा दृष्टि इस विषय पर है।

इसी प्रकार एक शिकारी का दृष्टि अपने बाण लगाने में ही रहता है। अगर कोई भी आजू-बाजू जा रहा है, आखिर एक राजा भी हो, उससे कोई परवाह नहीं है।

इसी प्रकार जब हम ध्यान कर रहे हैं, ज्ञान सुन रहे हैं, ध्यान के बारे में बातें कर रहे हैं, उतना ही केंद्रित होना है। एक ध्यानी को उस पर फोकस बहुत जरूरी है। इसलिए मैं एक शिकारी से कैसे केंद्रित होना है, यह बात सिखा हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

19) हड्डा ।

एक हड्डा, मिट्टी से छोटा सा पोटे बनाकर एक कीटक को लाकर, उसे पोटे में रखकर, कुछ दिनों तक गुंजन करता रहता है। कीटक उस ध्वनि को सुनते-सुनते, शरीर अनजाने से ही भ्रमर बन जाता है। वह छोटी सी कीड़ा भ्रमर बनकर पोटे को तोड़कर बाहर उड़ता हुआ आ जाता है।

यह सब कैसे हुआ? यह गुंजन का ध्वनि सुनते-सुनते कीड़ा भ्रमर बन गया। इसी प्रकार जब आप ध्यान में उस परमात्मा के साथ रहने से, आप भी परमात्मा बन जाते हो। उस परमात्मा के समीप पहुंचते हो। यह बात, उस भ्रमर को देखकर जाना हूं, श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं। इसी को 'भ्रमर कीटक न्याय कहते हैं' ।

20) मकड़ी ।

मकड़ी अपनी चारों ओर से जाला बनाती है। उसके मुंह से एक द्रव पदार्थ निकलता है। इसी से वह जाला बनाती है। अंत में वह सब अपने अंदर ले लेती है।

इसी प्रकार परमात्मा से निकला हुआ इस सृष्टि अंत में उनमें ही लीन होता है। इस विषय को जाना हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

आगे एक साधक ज्ञान पूर्वक कैसे रहना है ? कैसे होने से एक जीव को देवता बनेगा, यह सारे विषयों को मैंने जाना हूं, यदु महाराज से कहते हैं। श्री दत्तात्रेय जी, और आगे वह अपने शरीर को देखकर क्या-क्या सीखा हूं, अपने से भी बहुत कुछ सीखा हूं, ऐसे कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

21) मधुकोष निकालने वाला।

मधुकोष निकालने वाला से यह सीखा हूँ कि, धन का सदुपयोग ना कर कर छुपाने से, सिर्फ चोरों को आकर्षित कर कर अपाय बनता है। इसलिए संग्रहण शक्ति और लोभ प्रवृत्ति को पास नहीं आने देना है, यह विषय मैंने जाना हूं, श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं।

22) कबूतर।

एक कबूतर एक पेड़ पर अपना घोंसला बनाकर, कबूतरानी को जोड़ा लिया। दोनों पक्षी प्रेम से जी रहे थे। वह अंडे रखकर बच्चों को बड़ा किया, उन बच्चों के लिए पूरा दिन कष्ट कर कर आहार लाकर उन्हें पोषण किया था और बड़ा किया था। उस पक्षी के बच्चे पेड़ के नीचे आकर खेलते हुए एक शिकारी के जाल में फंस गए हैं। कबूतरानी भी बच्चों को ढूंढते ढूंढते, उन्हें उस जाल से निकालने की कोशिश में वह भी शिकारी के जाल में फंस गई थी। जब कबूतर लौट कर घोंसले में बच्चों को, कबूतरानी को नहीं दिखने से, वह निराश होकर वह भी दुखी होकर उस शिकार के जाल में गिर गया है। परिवार को छोड़ना नहीं चाहता था और छुड़ाने के चक्कर में वह भी फस गया था। तब कबूतर ऐसे रोते रहा। जब से पैदा हूं मैं आराम से घूमता रहता रहा, जब मैं स्त्री के चक्कर में पड़ा, तभी यह जाल में फंस गया हूं। अब मुझे कौन बचाएगा? करके सोचा था।

इन कबूतरों से श्री दत्तात्रेय जी ने क्या सीखा? अगर मानव ने बच्चों और पत्नी पर ममकार को बढ़ाते हैं, संसार के जाल में फंसकर जीवन का लक्ष्य, मोक्ष साधना को भूल जाता है। यह समझ आया है, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी। इसलिए ऐसे नहीं करना है, यह विषय सीखा हूं।

23) कुरर पक्षी ।

कुरर पक्षी, कुछ मांस के टुकड़े को लेकर अपने घोंसले में रखती है। उनके रक्षा करने के लिए दिन-रात बिना सोते हुए उनका सुरक्षा करती थी। एक दिन उसी पेड़ पर रहने वाले दूसरे पक्षियों खाने को आहार न मिलने पर उनके घोंसला में घुसकर झगड़ा कर कर इस मांस के टुकड़े को लेकर चले जाते हैं।

तब से वह कुरर पक्षी निश्चिंत रहती है। जो भी मिला वह खाकर बिना कुछ छुपा कर परम शांति में रहती है। इसे श्री दत्तात्रेय जी क्या सीखे हैं? संग्रहण कर कर छुपाना दुख का कारण है। इसलिए मेरा अपना कुछ नहीं होने पर मैं परम सुख संतोष में रह सकता हूं। इस विषय को जाना हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी ने।

24) कन्या ।

एक कन्या के माता-पिता दूसरे गांव चले गए थे। उस समय एक अतिथि आया है। भोजन बनाने के लिए चावल तैयार नहीं था, इसलिए उसको धान को कूटना पड़ी थी। अतिथि ध्यान कर रहे थे। ताकि परिस्थिति अतिथि को न जाने, वह पिछला आंगन में कूट रही थी, तब उनके चूड़ियां का शब्द ना सुनाई दे उसने पूरे चूड़ियां, दो को छोड़कर सारे निकाल दी थी। वह अपना काम प्रशांति से खत्म की थी।

इसे श्री दत्तात्रेय जी क्या सीखा है? ध्यान करते समय कुछ भी शब्द नहीं रहना चाहिए और जाना है कि एकांत और निःशब्द (चुप्पी) ही ध्यान सिद्धि का मार्ग है, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

वृक्षों ।

इतना ही नहीं, श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि, मैंने वृक्षों से भी बहुत कुछ सीखा हूं।

अगर वृक्षों नहीं होते, तब इस 84 लाख जीवों को खाने को नहीं मिलता है। जान देना वृक्षों का लक्षण है। इस तरह वृक्षों इस लोक को बहुत उपयोग होता है।

इतना ही नहीं जब वृक्ष सूखी हो जाता है, उस लकड़ी को चूल्हा में काम आती है। लकड़ी से घर के द्वारों को, खिड़कियों को, अलमारी को, और कई प्रकार के उपयोग होता है। इसी तरह मैंने सीखा हूँ कि मानव भी, लोगों के लिए उपयोग होना चाहिए। मतलब एक वृक्ष जिंदा या लाश, दुनिया का कुछ उपयोग ही रहता है, कहते हैं श्री भगवान श्री दत्तात्रेय जी।

इतना ही नहीं मानव, जानवरों से निकला हुआ Co_2 को लेकर उसे जीवों को उपयोगिता O_2 भी वृक्ष देते हैं।

इतना ही नहीं वृक्षों हर प्रकार के जीवन को छाया देते हैं, ताकि वहां वह आराम करें और वृक्षों, कई प्रकार के पक्षियों को आवास देते हैं।

मानव लोग वृक्षों को पत्थर से मारने पर, या उसे हमे काटने पर भी कुछ दुख होता नहीं है। मैं सबको उपयोग हो रहा हूं, समझ कर आत्मार्पण करते है। इस प्रकार वृक्षों से बहुत कुछ सीखा हूं, कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

ऐसे ही श्री दत्तात्रेय जी, प्रकृति से अनंत ज्ञान प्राप्त किए हैं, और भूमि पर संचारित करते समय ही नहीं, बाद में भी उनका ज्ञान लोगों को उपयोग हो रहा है।

श्री दत्तात्रेय जी वृक्षों के तरह जाते-जाते समय और बाद में भी उपयोग हो रहा है।

ऐसे प्रकृति से सीखना है, श्री दत्तात्रेय जी को देखकर, हम सबको सीखना चाहिए। इसलिए हमारे ऋषियों ने क्या कहा? प्रकृति को देखकर हमें पाठों सीखना चाहिए।

इतना ही नहीं, वृक्ष बड़े होते हुए धीरे-धीरे फूल, फल देते हैं। उनमें से बीज निकलते हैं। यह बीज ज़मीन पर गिरकर फिर वृक्ष बन जाते हैं।

इसी प्रकार मानव या जीव, इस भूमि पर आते हैं ताकि वह इस शरीर से साधना कर कर, परमात्मा तक पहुंचने केलिए। लेकिन यहां भूमि पर आने के बाद, वह किस लिए आए हैं नहीं जानकर, किस काम केलिए आए हैं नहीं जानकर....... सब कुछ भूल कर बंधनों में फंस जाता है।

बंधनों मतलब इंद्रियों के सुखों में, शरीर या पत्नी या बच्चों को, संसार को, संघ को, महत्व देकर उनके लिए कर्मों करते हुए, उस कर्म फलों को अनुभव करने के लिए दोबारा जन्म लेते रहते हैं, फिर से कर्मों करते हैं। इस प्रकार जन्मों लेते रहना, आना, जाना, मतलब “पुनरपि जननं पुनरपि मरणं” हो रहा है।

यह सब देखकर मुझे लगा है कि क्या मानव को शरीर लेने के बाद

इतना कष्ट न होने से अच्छा, परमेश्वर को या भगवान को जानने से मोक्ष ही पा सकते हैं ना? मतलब शरीर दोबारा नहीं लेने के आवश्यकता नहीं होगा ना। यह विषय मैंने जाना हूं, श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं।

शरीर।

श्री दत्तात्रेय जी और कहते हैं कि वह शरीर से भी सीखे हैं।

यह शरीर अनित्य और अशास्वत है। पांच भूतों से बना हुआ शरीर मरने के बाद जलकर राख बन जाता है। या तो कुछ कीड़ों का आहार बन जाता है। ऐसे ही इन कीटकों भी किसी और का आहार होता है। इस प्रकार इस सृष्टि में कुछ भी शाश्वत नहीं है। श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि इस शरीर से मैंने सीखा है कि जो भी पैदा होता है वह नाश तो होता ही है।

भगवान बहुत कुछ जीवन को सृष्टि कर कर, संतुष्ट नहीं होने से आखिर में मनुष्य को सृष्टि किया है। लेकिन दूसरे जीवों को बुद्धि ना होने पर परमात्मा को नहीं जान सकते हैं। लेकिन मानव शरीर को, मनुष्य को, अपने आप को जानने के लिए बुद्धि दिया है। इस बुद्धि के कारण ही मानव ने परमात्मा को जान सकता है। इसलिए मानव शरीर का महानता को जाना हूं, ऐसे कहते हैं श्री दत्तात्रेय जी।

इसलिए बुद्धिमान लोग इस शरीर से साधना कर कर, ज्ञान प्राप्त कर कर, परमात्मा को जानना चाहिए। इसी विषय को मैं जाना हूं। लेकिन बहुत लोग अभी मोक्ष क्यों चाहिए और अभी और बहुत समय है ना, करके कहते हैं। लेकिन ध्यान के बारे में बचपन से जानना चाहिए। ऐसे जानने से उनका प्रवर्तन अच्छा रहता है, बहुत ज्ञान सीखते हैं।

इसलिए कोई भी इस भूमि पर शरीर रहते हुए अगर जानने का प्रयत्न करता है। तब जन्म रहित स्थिति या मोक्ष स्थिति पा सकते हैं। यह विषय जानने वाला बहुत ही धन्य है।

इसलिए न केवल बड़ों से, और योगियों से, प्रकृति से भी सीखना चाहिए। सीखते रहना चाहिए । जैसे श्री दत्तात्रेय जी। इसलिए पत्री जी, सबसे सीखनो को कहते हैं।

तब क्यों सीख नहीं पा रहे हैं? मतलब सिर्फ अज्ञान और अहंकार का कारण ही है। उनसे क्या सीखना है? मुझे ही सब कुछ मालूम है का अहंकार। इतना ही नही, पत्नी और बच्चों पर, घर पर, ममकार रखने वाले, उन्हीं पर पूरा समय व्यतीत करते हैं। और ज्ञान नहीं सीख पा रहे हैं।

मनस जितना ज्यादा पैसे रहने पर, जितना ज्यादा पद है, उसे उतना महान समझ रहा हैं। इतना ही नहीं प्रपंचिक पढ़ाई महान समझकर उनका ही प्रमुखता देते हैं। अध्यात्मिक विद्या को निर्लक्ष्य करते हैं।

श्री रमन महर्षी।

श्री रमन महर्षी को देखिए, वह कुछ भी नहीं पड़ा है। लेकिन उसने परमात्मा को जानने वाले पढ़ाई सीखा है। वही, परा विद्या है, मतलब परमात्मा के बारे में विद्या, मतलब आत्म विद्या को जाना है।

अगर परमात्मा को पहुंचना है इस शरीर से, प्रापंचिक विद्या से संभव नहीं है। जो कोई ध्यान साधना करता है, आत्मा विद्या अभ्यास करते हैं, उन्हीं को संभव है। इसलिए जो है उसी से संतुष्ट रहकर दूसरे जीवों को हिंसा नहीं करना है।

पक्षियों को, मछलियों को, मार कर खाना नहीं चाहिए। वह सब भी भूमि पर जीने के लिए आए हैं। इसलिए फलों से, हरियाली से, सब्जियों से, संतुष्ट रहना चाहिए।

सृष्टि करता का सहायता।

सृष्टि करता ने मानव को सृष्टि करने से पहले ही, सबको जरूरत वाली आहार को तैयार करके रखा है। वह किसी को भी भूख नहीं रखता है।

एक बार विवेकानंद जी एक जगह गया था और रेलगाड़ी पहुंचने समय रात हो गया था।

बहुत भूख लगी थी। इतनी रात को 10:00 बजे में किसके घर जाऊं? किसी को मैं जानता नहीं हूं? ऐसे कह कर रेलवे स्टेशन के सीमेंट की सोफा पर ही बैठकर ध्यान करता रहा। तब उस स्टेशन मास्टर ने एक लांतर के साथ आया, भजन लेकर।

तब विवेकानंद उन्हें पूछा आपको कैसे मालूम है कि मैं भूखा हूं? आप मुझे ढूंढते यहां तक क्यों आए हैं?

तब स्टेशन मास्टर जवाब देता कहा, जब मैं सो रहा था, श्री राम जी ने मुझे नींद में आकर कहा कि वहां पर स्टेशन में एक योगी ध्यान में बैठा है, वह भूखा है, उसे भोजन खिलाओ। इसलिए मैं भोजन लेकर आया हूं।

यहां पर याद रखिए अगर एक योगी भोजन नहीं कर कर बैठे हैं, तब परमात्मा किसी के रूप में उसे भोजन खिलाता है।

इसलिए जान लीजिए कि, भगवान के मार्ग में आने वाले को, प्रकृति को गौरव करते हुए, परमात्मा के ऊपर विश्वास से रहना वालों को, कुछ भी कमी नहीं रहती है।

सहज बात है कि लोग सोचते हैं कि अगर मैं व्यापार बंद कर कर, अपना उद्योग छोड़ देता हूं, तब कैसे जी पाऊंगा? लेकिन अगर धर्म बद्ध होकर कमा रहे हो, दूसरों को खिलाकर आप खाते हो, तब उन्हें किसी चीज के लिए कमी नहीं होती है।

इसलिए ध्यान करने वाले योगी, हमेशा त्रिकरण शुद्धि के साथ साधना कर कर ज्ञान मार्ग में रहने से, प्रकृति कभी आपको भूख नहीं रहने देगी। किसी भी तरीके से आपकी जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलती है।

स्वामी राम तीर्थ।

इसी प्रकार श्री स्वामी राम तीर्थ के जीवन में भी एक संगठन हुआ है। श्री रामतीर्थ एक बड़ा प्रोफेसर थे। उसने अमेरिका में भी जाकर भारत लौट आए थे। श्री राम तीर्थ अपना पगार दूसरों के लिए खर्च कर देता था। तब उनके पत्नी पूछी थी कि, अगर आप अपना पूरी पगार खर्च कर देते हैं, तब कल हमारे बच्चों को क्या स्थिति होगा? तब उसने एक ही बात बताया था।

'अगर हम विश्व के लिए काम करेंगे, तब क्या विश्वेश्वर हमारे बच्चों को नहीं देखेगा?' उनके बेटे बाद में बहुत बड़े पदों पहुंच गए थे।

इस विषय प्रस्ताव किया हूं कि आप जानेंगे कि अगर विश्व के लिए हम काम करेंगे, तब विश्वेश्वर भी हमारा परिवार को देखते हैं।

श्री राम तीर्थ के जीवन में एक और संगठन हुआ था। उनका जब 40 साल हुए थे, तब उन्हें वैराग्य हुआ था। हिमालय में जाकर ध्यान कर कर बाकी जीवन को बिताने चाहते थे। सब कुछ बेचकर अपने बच्चों को, पत्नी को, जरूरतों के इंतजाम कर कर, अपने लिए कुछ रखकर, हिमालय को चले गए थे। गंगा नदी को पार कर दूसरी ओर ध्यान करने के मन में था। तब उनको एक सोच आया था। मैं भगवान के लिए ही ध्यान कर रहा हूं ना ? पैसे अपने लिए क्यों रखना है? अगर यह भी नहीं होता तब अच्छा होता है ना? तुरंत उसने कपड़े और सामान का बक्सा, गंगा नदी में फेंक दिया था। जाकर ध्यान में बैठ गया था। तब उनके पास अपना धोती के अलावा कुछ भी नहीं था।

हिमालय में तब आजू-बाजू में छोटे-छोटे परिगणाओं ही थे। एक आदमी श्री राम तीर्थ के पास आकर, खाने की चीज वहां रखकर, बगल में बैठ गया था। श्री राम तीर्थ आंखें खोलते ही इस आदमी ने कहा, स्वामी जी आप ठीक है ना।

तब श्री राम तीर्थ ने उससे पूछा, आपको कैसे मालूम कि मैं यहां हूं? आप यहां क्यों आए हैं?

एक गाड़ी में आने वाला, वह एक छोटा जमींदार था। उसने कहा कि श्री राम जी मेरे सपनों में आए थे और कहा कि गंगा किनारे एक आदमी साधना कर रहा है। उसके पास जो भी था सब कुछ गंगा नदी में फेंक दिया। परमात्मा के भरोसे पर वहां बैठा है।

इसलिए आप एक बार जाकर उनसे मिलना है। इसीलिए मैं आया हूं। आज से आपका साधना आप करते रहिए, अच्छी तरह से। आपका भोजन का व्यवस्था दिन में, मैं दो बार में इंतज़ाम करता हूं। आप   जितना दिन चाहे साधना करो, ऐसे कहा जमींदार ने।

देखिए यह दोनों संगठनों देखकर हमें क्या समझ आता है। हम हर एक शंका को छोड़कर, योग मार्ग में रहकर, ज्ञान प्राप्त करते रहते हैं, तब परमात्मा के ऊपर भरोसा रखेंगे, तब प्रकृति द्वारा हमारा योग क्षेम को देखने के लिए परमात्मा हमेशा तैयार रहता है।

इस विषय को भागवत गीता में अध्याय 9 श्लोक 22 में श्री कृष्ण जी कहते हैं।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।। (भ.गी. 9-22)

तात्पर्य : जो भी दूसरे चिंताएं को छोड़कर, मेरे पर विश्वास रखकर, मुझे पाने के लिए ध्यान करेंगे, हमेशा मुझ पर ही निष्ठा रखने वाला का योग क्षेम, मैं ही देखूंगा।

श्री राम जी, लक्ष्मण जी को दिया सलाह।

जब राम रावण का युद्ध हो रहा था...... श्री राम जी, लक्ष्मण जी से कहते हैं कि, युद्ध नीति क्या है जाकर श्री रावणासुर से सीखो।

तब लक्ष्मण जी पूछते हैं, रावणासुर हमारा शत्रु है ना? उनके पास मुझे भेज रहे हो? तब श्री राम जी कहते हैं कि, नहीं वह अधर्म नहीं है, युद्ध नीति बताएगा जाओ।

तब रावणासुर, युद्ध क्या है? युद्ध कैसे शुरू करना? कैसे करना? यह सब नीतियों रावणासुर ने श्री लक्ष्मण जी को अच्छा समझाया था।

क्योंकि रावणासुर चार वेदों पड़ा है, सब कुछ जानता है। लेकिन वह काम वांचना नहीं छोड़कर, गलत है मालूम होते हुए भी, अपना प्रतिष्ठा के लिए युद्ध करना पड़ा।

भगवान बुद्ध ने क्या कहा है ?

भगवान बुद्ध ने एक विषय बताया था। अगर आपको एक व्यक्ति परिचय हुआ है तो? उनसे आपको कुछ जरूरत होगा, या आपको उनसे कुछ सीखना है, तभी उस व्यक्ति आपके सामने आता है। आपका कुछ ना कुछ पाठों सिखाने के लिए ही, उस संगठन आपके जीवन में होता है। यह जानना चाहिए।

मतलब अभी आपको एक व्यक्ति सामने दिखा है, अगर प्रकृति हमारे सामने लाया है, मतलब उस व्यक्ति से हमें कुछ सीखने को है। कारण यही है कि सब के अंदर अच्छे गुण नहीं होते हैं, सब में सारे बुरे गुण भी नहीं होते हैं। इसलिए किससे क्या सीखना है बाद में पता लगेगा। इसलिए पत्री जी से हम

सब आकर्षित हैं।

ऐसे ही बुद्ध भगवान और कहते हैं कि, हर एक व्यक्ति महान है। बुरे लोगों में भी कुछ ना कुछ अच्छी बात रहती है। इस बात को आपको सीखना है। सामने वाले व्यक्ति में हो सकता है कि उसमें 99 बातें गलत होंगे एक बात तो अच्छे होंगे, तब उससे एक बात को सीखना का प्रयत्न करना चाहिए। अगर आप में 99 अच्छे बातें है और एक गलत है तब आपको उस एक बात को ठीक करने को प्रयत्न करना है।

इसी प्रकार हमारे सामने वाला व्यक्ति से सीखना चाहिए। हमारे सामने आए संगठनों से सीखना चाहिए, प्रकृति से सीखना चाहिए, महात्माओं से सीखना चाहिए, कई पुस्तकों से सीखना चाहिए।

एक ध्यानी को क्या करना चाहिए ?

अगर एक दत्तात्रेय जैसे बनना है तो, बहुत लोगों को चुनकर, उनसे सूक्ष्म तरीके से ग्रहण करना चाहिए। एक छोटा सा मधुमक्खी से एक सर्प से, पंचभूतों से, ऐसे कई प्रकार जीवों से, श्री दत्तात्रेय जी ने सीखा है। हम यह सब पर ध्यान नहीं करते हैं, लेकिन श्री दत्तात्रेय जी ने इनसे बहुत ज्ञान सीखा है।

ध्यानी लोगों को हमेशा एक बात याद रखना है। क्या है ? हम सब इस भूमि पर पधारे सत्य अन्वेषण के लिए निरंतर विद्यार्थी है। जब तक आपको सत्य का दर्शन नहीं होता, तब तक आप विद्यार्थी ही है। मास्टर नहीं है। जब आपको विद्यार्थी समझकर आप विनम्रता पूर्वक रहेंगे, आपको सारे पाठों आएंगे।

आपको सिखाने के लिए प्रकृति तैयार रहती है। एक पुस्तक के द्वारा या एक दोस्त द्वारा या एक गुरु द्वारा या ऐसे क्लासों द्वारा, आपको सीखने वाले विषयों बहुत कुछ सिखाया जाता है। हर समय हमें सीखने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। हम अभी भी विद्यार्थी हैं।

अगर इस भूमि पर मानव शरीर लिया है, इसका मतलब सत्य अन्वेषण के लिए ही है। मानव जन्म लेते ही तुरंत बहुत लोग सत्य अन्वेषण नहीं कर पाते हैं, क्योंकि कुछ जन्मों तमोगुण में, कुछ जन्मों रजोगुण में, कुछ जन्मों

सात्विक गुण में रहते हैं।

इन तीनों गुणों से होने वाले जन्मों में कर्मों भी बढ़ते हैं। मतलब तमोगुण, रजोगुण में पापों को बहुत करते हैं। सात्विक गुण में पुण्य कर्मों ज्यादा करते हैं। इन सारे कर्मों हमें बंधन में रखते हैं। इन बंधनों अगले जन्मों का कारण होते हैं। इसलिए इन तीनों गुणों को छोड़ना चाहिए।

इसी विषय को भागवत गीता में श्री कृष्ण जी कहते हैं।

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।

निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ।। (भ.गी.2-45)

तात्पर्यः हे अर्जुन वेदों में त्रिगुणात्मक से होने वाले सांसारिक विषयों को सूचना करते हैं। आप त्रिगुणों को छोड़कर, द्वंदों छोड़कर, निरंतर शुद्ध सत्य को आश्रय करने से, योग क्षेम पर दृष्टि नहीं रखकर आत्मज्ञानी बनो।

मतलब इन तीन गुणों को पार करना चाहिए। वेदों तीन गुणों तक बताए हैं। मतलब प्रकृति देवताओं को आराधना करना, उसके लिए मंत्रों, स्वर्ग सुखों के लिए मंत्रों, यह सभी है, अंदर कहीं थोड़ा सा ज्ञान दिया हुआ है।

मतलब इन तीनों गुणों से करने वाले कर्मों को ही वेदों बताए हैं, जब तक इन तीनों गुणों को पार कर, निर्गुण स्थिति में न जाएंगे, तभी तक आप मेरे लोक में नहीं पहुंचेंगे, यह विषय कहा गया है।

पत्री जी ।

मतलब अभी जो पिरामिड मास्टर्स हैं, वह सब शुद्ध सात्विक गुण में है, इसलिए ध्यान और ज्ञान दोनों को पकड़ा है। इसीलिए पत्री जी कहते हैं की, पिरामिड मास्टर्स मामूली से लोग नहीं है। वह दिखने में सादा सीधा रहते हैं, सामान्य लोग दिखते हैं, लेकिन वह बहुत महान लोग हैं।

इसीलिए ध्यान करते हैं और ध्यान सिखाते भी हैं। सबी का भलाई का सोच रखते हैं। हर एक जीव सकुशल रहने का आकांक्षा रखता है और शाकाहारी भोजन का पालन करते हैं।

एक समय में, कुछ हजारों साल ध्यान करने से नहीं मिलने वाला ज्ञान, पत्री जी के वजह से इन दोनों, आसानी से मिल रहा है। सब लोग जल्दी सीख

रहे हैं और जान भी रहे हैं।

अगर मैं भागवतम नहीं पड़ता मैं श्री दत्तात्रेय जी के बारे में नहीं बता सकती थी । वैसे ही उद्धव के बारे में भी नहीं बता सकती थी। पत्री जी हर बार स्वाध्याय स्वाध्याय कहते रहते हैं। हम सब, कुछ कहानियां पढ़कर, अपनी प्रापंचिक जीवन में, और कुछ कल्पित कहानियां पढ़ते हुए, उन सबको अपने जीवन में लाते हैं और दुखित रहते हैं।

जब से पत्री जी हमारे जीवन में आए हैं, सत ग्रंथों का स्वाध्याय कर रहे हैं। सत का मतलब सत्यम मतलब भगवान के बारे में कहने वाले ग्रंथों हैं। वह भागवतम या भागवत गीता या रामायण या उपनिषदों, इन सब में भगवान के बारे में कहते हैं। उनमें कौन से सीखना है? कौन से छोड़ना है? कौन से क्या प्राप्त करना है? यह सब के बारे में जानते हैं अभी ।

भागवतम पूरा सृष्टि के बारे में, आदि से रहने वाले विषयों के बारे में है। हर एक, इतना महान होने का कारण को जानते हैं। भागवतम नहीं पड़ता है तो, श्री दत्तात्रेय जी के बारे में नहीं जानते होंगे।

इतना महानता, इतना सूक्ष्म दृष्टि से प्रकृति से 24 गुरुओं को चुनकर, उनसे ज्ञान प्राप्त किया है श्री दत्तात्रेय जी। उनको एक व्यक्ति नहीं, बल्कि प्रकृति ही गुरु हो गया है। ऐसे श्री दत्तात्रेय जी का शिष्य बना श्री परशुराम जी। देखिए श्री परशुराम जी कितना बड़ा महान है। ऐसे महान व्यक्ति का गुरु बना श्री दत्तात्रेय जी।

उनका मामूली सी जीवन नहीं है। यह 64 कलाएं उन्होंने सीखा है। वह सब सीखने से अस्त्र विद्या भी, शास्त्र विद्या भी, पांडित्य भी, ज्ञान भी पाते हैं। 64 कलाएं भी उनके आते हैं। उतना ज्ञान है, इसलिए उनके महानता के बारे में हम बात कर रहे हैं।

मतलब इन दिनों इस ज्ञान को आसानी से पुस्तकों द्वारा, मास्टर द्वारा, गुरुओं द्वारा सीख रहे हैं। यह सब पत्री जी हमें पढ़ने को कहा था। इसलिए कहते हैं कि हम भी उतना महान बनने के लिए ही है। 'एक जीव को जीव तक सीमित नहीं रहना है। एक जीव को देवता बनना चाहिए, यही कहते हैं'।

आप देवता कैसे बनेगा? जब मनुष्य का अशुद्धताओं को निकाल कर, जो रखना है उनको रखकर, सामने वालों को जो देना है वह देकर, मेरा करके स्वार्थ को छोड़कर, मैं का अहंकार को छोड़कर, अपना करके ममकार, दोनों छोड़कर, आप भी महान बन सकते हो।

मुख्य बात है कि मैं और मेरा छोड़ना है। जो आप नहीं है, उसे आप कह रहे हो। जो आपका नहीं है, उसे अपना कह रहे हो। देखिए अगर मैं शरीर होता, मैं राज्यलक्ष्मी कह सकता हूँ। लेकिन मैं शरीर नहीं हूँ ना, मैं आत्मा हूँ।

जो शरीर मैं नहीं हूँ, उस पर इतना ममकार क्यों? मैं महान हूँ, मैं पढ़ी-लिखी हूँ, मैं पैसे वाला हूँ, ऐसे कहेंगे तब आप में अहंकार हैं। जब शरीर ही आप नहीं है, तब वह आपका है क्या? नहीं ना?

लेकिन इस सृष्टि में सब जगह परमात्मा ही है। सब कुछ उसी का है। अपना समझते हो, लेकिन जब ऊपर जाएंगे तब कुछ भी नहीं लेकर जाएंगे ना? अपना शरीर ही नहीं लेकर जा सकते हो। लेकिन मुझे इतना संपत्ति है, उतना है करके अहंकार में रहते हो।

इसलिए जब आप किसी को बांटकर खाते हो, वह यज्ञ फल समान है।

भगवान कौन है? 'आत्मा'। आत्मा हर जगह है ना? चींटियां से लेकर ब्र्म्ह भगवान तक सब आत्माएं की स्वरूप ही है। आत्म स्वरूप को आप खिलाकर खाएंगे तब वह यज्ञफल बन जाता है। ऐसे भागवत गीता में हमें बोध करता है। श्री कृष्ण जी कहते हैं कि किसी को न बांटकर खाना, वह चोरी का खाना समान होता है।

यह सब जब भी जानेंगे! मतलब जो भी स्वार्थ छोड़कर निस्वार्थ से जीयेंगे, सबको बांटकर जब खाते हैं, ज्ञान प्राप्त करते रहते हुए, मैं इस भूमि पर कैसे आया हूं, सब लोग ऐसे ही आए हैं, का समझ पाकर हम सब एक हैं का भाव रखकर, सबके लिए जिस दिन कष्ट करते हो, आप भगवान ही बनेंगे।

यही विषयों श्री दत्तात्रेय जी से सीखना है।

गुरु के प्रति, एक शिष्य का व्यवहार कैसे होना चाहिए ?

एक गुरु के पास एक शिष्य को कैसे रहना चाहिए? कैसे रहने से विद्या सीख सकता है? अभी जानते हैं। पूर्व काल में गुरुकुल में अगर विद्या सीखना था तब सारे भोगों को छोड़कर गुरु का आश्रय करने के लिए आश्रम पहुंचते थे। वहां पर गुरु का सेवा करते थे। वहां पर गुरु उन शिष्यों को 12 साल तक रखकर उन्हें अच्छी तरह से विद्या अभ्यास करवाते थे।

सारे शिष्यों को एक ही तरह रहने के लिए एक आश्रम का जीवन को आदत डालकर, अच्छी विद्या सिखाते थे। इस कलियुग में, अगर सीखना है तो? वैसे आश्रमों नहीं है। मुख्यतः आध्यात्मिक विद्या सिखाने वाले कहीं भी नहीं है।

इसीलिए आत्मा विद्या मतलब ब्र्म्मा विद्या सीखना चाहने वाले लोग, गुरु के पास कैसे रहना चाहिए? कैसे व्यवहार करना चाहिए? इन विषयों अभी जानते हैं।

''गुरु ब्र्म्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः!
गुरु साक्षात पर ब्र्म्म तस्मै श्री गुरुवे नमः"!

ऐसे कहते थे, बड़ों ने ।

इस श्लोक के तद्नानुसार गुरु ब्र्म्मा, विष्णु और शिव स्वरूप है। मतलब परम ब्र्म्म इन तीनों स्वरूप में गुरु को देते है। जैसे गुरु शिष्य को ज्ञान देते समय ब्र्म्म स्वरूप.... और शिष्य को निरंतर ज्ञान बोध से बढ़ावा करते हैं तो विष्णु स्वरूप.... और शिष्य का अज्ञानता को नाश करते समय शिव का स्वरूप लेता है। इन तीनों रूपों को मिलाकर ही परम ब्र्म्म स्वरूप, मतलब परम ब्र्म्म ही गुरु के रूप में आते हैं। इसीलिए गुरु को आदर देना चाहिए।

प्रापंचिक जीवन में गुरु का आवश्यकता नहीं है समझते हैं, और विग्रह आराधना काफी है, स्तोत्र पढ़ने से काफी है, यज्ञ करने काफी है, इन प्रकार देवों के ऊपर भक्ति प्रदर्शन करना काफी समझते हैं। लेकिन यह सब मानव को भोगों दे सकते हैं, लेकिन मोक्ष नहीं दे सकते हैं।

अगर मोक्ष प्राप्त करना है तो? मतलब दुखों से शाश्वत के लिए दूर रहना है तो, तब अवश्य आध्यात्मिक विद्या मतलब आत्म विद्या अभ्यास करना चाहिए! इसके लिए एक सद्गुरु का आश्रय लेना ही है!

सद्गुरु को आश्रय करने पर वह कहते हैं कि आप शरीर नहीं है, आप आत्मा है। केवल आप ही नहीं सब लोग आत्म स्वरूप ही है! शरीरों अलग है लेकिन आत्मा एक ही है! वास्तव में एक ही चैतन्य है, वही आत्मा है, गुरु के द्वारा परमात्मा हमें बोध करता है।

तब तक कई प्रकार साधनाएं कर कर अपने आप को बड़े भक्त समझते हैं। इसलिए यह अज्ञानता को निकालने के लिए एक सद्गुरु के रूप में हमारे पास उस परमात्मा आते हैं।

जब तक पत्री जी ना आए हैं, हम सब उसी अंधभक्त में थे। उसने कहा है कि सबके अंदर वही परमात्मा ही है! वही आत्मा है कहते हुए, आप ही भगवान है, मतलब आत्मा है उसने कहा है। लेकिन सब अज्ञानता में रहने से अपने आप को मानव ही समझ रहे हैं ऐसे कहते हैं पत्री जी।

ऐसे, जब तक पत्री जी जैसे सद्गुरु आकर, खुद ही भगवान है का विषय किसी को मालूम नहीं है। लेकिन उनका निरंतर बोधों द्वारा मैं आत्मा हूँ मतलब भगवान हूँ, को बहुत लोग जाने हैं।

वही नहीं मैं आत्मा हूँ तब कहां से आया हूँ ? कहां जाना है? मेरा लक्ष्य क्या है? यह सब विष्णु स्वरूप में गुरु द्वारा जानेंगे।

वही नहीं खुद को शरीर समझ कर बैठे लोगों को मैं आत्मा हूँ का ज्ञान देकर, इनका अज्ञानता को निकलने से पत्री जी शिव स्वरूप बन जाते हैं।

इसीलिए गुरु का तीनों रूप मिलाकर परमात्मा स्वस्र्प कहते हैं। इतना महान गुरु के पास सीख कर, सत्य क्या है को जानकर, सत्यम के ओर यात्रा करने वाले शिष्य, कैसे रहना चाहिए? कैसे रहने से गुरु को इष्ट हो जाता है? यह विषयों जानते हैं अभी।

मुख्यतः 'शिष्य को गुरु पसंद नहीं होना, गुरु को पसंदीदा रहना चाहिए एक शिष्य' को, बल्कि मैं महान हूँ, ध्यान कर रहा हूँ, सेवा कर रहा हूँ, कर कर

अहंकार से नहीं रहना है। इस 'मैं, मैं' का अहंकार गुरु के पास नहीं दिखाना चाहिए और निकालना या खोना चाहिए।

योगी लोग गुरु को, शिष्य को एक तराजू से तुलना करते हैं। तराजू के दोनों तरह दो तालियां सामान्य से रस्सी से बंधे होते हैं। एक थाली में गुरु, दूसरा में शिष्य समान रहते हैं। लेकिन गुरु ज्ञान से भरा है, शिष्य अज्ञानता से भरा है।

बाद में गुरु का बोध से शिष्य अपना अज्ञानता धीरे-धीरे निकाल कर, ज्ञान प्राप्त कर कर, शिष्य भी गुरु के तरह बनता है।

इसलिए शिष्य जितना भी जाने, गुरु के सामने अनजान जैसे ही रहना चाहिए। और शिष्य को समझना चाहिए कि अगर उनमें जरा सा भी दुख है, तब वह अज्ञानता में अभी भी है। इस दुख को दूर करने के लिए गुरु के पास आया हूँ, यह समझकर गुरु के सामने कोरा कागज के तरह रहना चाहिए। तभी गुरु का वाक्य या ज्ञान सही तरह समझ पाएगा। यह बात शिष्य को जानना है।

सत्य साइ बाबा जी कहते थे, एक अखबार में अक्षरों नहीं लिख सकते हैं, लेकिन कोरा कागज पर लिखेंगे तो अक्षरों स्पष्ट से दिखता है। इसीलिए आपका मानस अखबार की तरह नहीं होना है, बल्कि एक कोरा कागज जैसे होना चाहिए।

इसलिए अगर शिष्य को गुरु के सामने कोरा कागज जैसे रहेंगे तब? उसे गुरु का हर एक बात या विषय अच्छी तरह समझ पाएंगे और ह्मदय में निक्षिप्त हो जाता है।

प्रापंचिक विषयों बोध करने वाले गुरुओं विग्रह आराधना पूजा करने को कहते हैं, लेकिन सद्गुरु विग्रह आराधना नहीं, सत्य आराधना मतलब आत्मा आराधना, मतलब ध्यान करने को कहते हैं। क्योंकि? सद्गुरु सत्य में ही जीते हैं, और सत्य ही कहते हैं।

यह पूरी सृष्टि भगवान ने ही किया है। पांच भूतों, शिलाओं, लोहे, वृक्षों, जानवरों को, मानव को, सब इस सृष्टि में एक भाग ही है! और वही

नहीं इस सृष्टि करता हर एक में रहते हुए सबको चलाते हैं, कहते हैं गुरुजी। उस परमात्मा को पहुंचने के मार्ग बताने के लिए ही गुरु आते हैं। इस भूमि पर सिर्फ एक सद्गुरु ही मार्ग बता सकता है।

और कोई भी माता-पिता, भाई, बहन, बंधु गण, पति या पत्नी, उस भगवान के बारे में या उसे पहुंचने का मार्ग नहीं बता सकते हैं। सिर्फ एक सद्गुरु ही भगवान के पास पहुंचा सकता है। ऐसे सद्गुरु हमारे जीवन में कैसे आएंगे, सिर्फ और सिर्फ परमात्मा के लिए तीव्र इच्छा होने पर ही होगा। तब आपका जीवन में एक सद्गुरु आता है।

मीराबाई जब कृष्ण के लिए तीव्र कांक्षा की थी, तब उनको बोध करने के लिए रविदास नामक गुरु आया था। वह बहुत बड़ा ज्ञानी, और वह मीराबाई को कृष्ण को कैसे आराधना करने से उसे पहुंच सकेंगे, बोध किया है।

किसी में भी जब भक्ति परिपक्व होता है, तभी ध्यान में आते हैं। तब गुरु कहते हैं कि आप खोजने वाला भगवान बाहर नहीं है, बल्कि अंदर शरीर में ही है। जब आप अंतर्मुख होंगे, तभी मिलेगा, शिष्यों को बोध करता है। भगवान को दिखाने वाला गुरु ही है, इसलिए गुरु के पास कैसे व्यवहार करना है? कैसे रहना है? जब शिष्य सीखेगा तब वह विद्या, शिष्य को प्राप्त होगा। गुरु अपने मुंह से कुछ नहीं बताते हैं, सिर्फ शिष्य को ही जानना चाहिए। इसलिए एक शिष्य को गुरु के प्रति, 1. प्रेम, 2. सत प्रवर्तन, 3. विनम्रता, 4.भरोसा, 5.विश्वास। यह सारे विषयों एक शिष्य के पास रहना चाहिए।

1) प्रेम ।

सबसे पहले एक शिष्य को गुरु के प्रति प्रेम जुटाना है, और ना अपने धन संपत्ति पर, या माता-पिता, या पत्नी, या बच्चों पर, या बंधुओं पर, या अपनी जाति पर, या मजहब पर, या देश के ऊपर से भी गुरु से प्रेम जुटाना है। क्योंकि ? इनमें से कोई भी भगवान को नहीं दिखा सकते हैं। सिर्फ एक गुरु ही भगवान को पहुंचाने का मार्ग दिखा सकता है। भगवान को दिखा सकता है। इसलिए सबके ऊपर अधिक प्रेम उन्ही पर दिखाना चाहिए।

तब उनका बातें और बोधों, ज्ञान, सब अपना सकते हैं। इस प्रपंच में अज्ञानी को बहुत दुख होता है। कारण यही है कि असत्य को सत्य मानना । और तब असत्य को पकड़ते हो उसके जीवन में आनंद कहां से मिलेगा ? हमेशा दुख ही रहता है। इस दुःख मिटाने का मार्ग ही ज्ञान, उस ज्ञान गुरु ही देता है। इसलिए गुरु के प्रति प्रेम जुटाना है ।

2. सत प्रवर्तन ।

सत्प्रवर्तन मतलब जब तक मैं गुरु को कहता हूँ, वह जानता नहीं है का सोच शिष्य को मना है, असत्य बात नहीं करना है, सिर्फ सत्य ही बात करना है। अपने पड़ोसी पर या बाहर वाले पर या आपके नापसंद वाले पर या किसी के बारे में भी गुरु के पास, एक शिष्य को बात नहीं करना चाहिए। गुरु के सामने एक शिष्य किसी को भी नीचे नहीं दिखाना, बहुत ध्यान से समझना है कि भगवान ही मेरे सामने खड़ा हुआ है। उनको सब पता है, मतलब गुरु को न जानने वाले विषय कुछ भी नहीं है, यह बात एक शिष्य को जानना चाहिए। एक सद्गुरु को बहुत सारा शक्ति होता है। इसलिए व्यर्थ की बातें, अनावश्यक भाषणों, पड़ोसियों पर अफवाहें बोलना, यह सब गुरु को एक शिष्य बताना नहीं चाहिए। उनको सब कुछ मालूम है का याद रखना है। जरूरत के बातों ही बात करना है, नहीं तो मौन रहना चाहिए।

इतना ही नहीं जब गुरु बात करता है, उन्हें सुनना है और जब वह बोलने का अनुमति देता है उसे फायदा उठाकर बोलते ही नहीं रहना चाहिए। एक और बात क्या है जब आप दूसरों के बारे में बात करते हैं, तब उन्हें अब तक मेरे पाठों समझ नहीं आया है करके गुरु सोचता है। सबके अंदर एक ही आत्मा है कहता हूँ, और फिर भी वह जाकर उनके बारे में बात क्यों करते हैं, ऐसे सोचते हैं गुरु। मतलब उनका बोधों शिष्य को अभी तक समझ नहीं आया है, यह अनुमान लगाता है, यह ग्रहण करता है।

इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि ‘आपकी बातें, या तो तुम्हें उपयोग होना है, या सामने वालों को भी उपयोग होना है’। ऐसे अनुपयोगी बातें नहीं करना चाहिए। उसने ‘नो कमेंट, नो जजमेंट’, कहते हैं मतलब इस संदेश में कितना

गहरा अर्थ है। इसलिए गुरु के पास एक शिष्य बहुत सावधानी से, ध्यान से बात करना चाहिए। उसका पूछा हुआ प्रश्न के लिए ही उत्तर देना चाहिए। ऐसे ही एक शिक्षक का प्रवर्तन होना चाहिए।

3. विनम्रता।

गुरु के सामने एक शिष्य को बहुत विनम्रता से रहना है। उस विनम्रता, एक राजा के सामने जैसे एक सामंत, और जैसे एक मालिक के सामने सेवक, ऐसे रहना चाहिए। एक शिष्य को गुरु के सामने उतना ही विनम्रता से रहना चाहिए। सिर्फ उस विनम्रता से रहने पर ही एक शिष्य को ज्ञान प्राप्त होता है।

इसलिए उपनिषदों में भी कहते हैं कि, एक अहंकारी को आत्मज्ञान नहीं मिलता है। एक शिष्य को अपने गर्व से सिर उठाकर नहीं कहना है कि, यह विषय मुझे पहले ही मालूम है। गुरु के द्वारा निकले बातें का मतलब, वहां पर उन विषयों को किसी और को जरूरत है। इसलिए वह कह रहा है, यह समझना है।

एक शिष्य सिर्फ अपने तक का ही देखता है, अपने तक का ही सोचता है, लेकिन गुरु वहां पर सब लोगों के जरूरत बातें बताते हैं। एक शिष्य सिर्फ अपना भलाई देखता है लेकिन एक गुरु सबका भला देखता है। सबको सीखना है। इसलिए बार-बार विषयों को दोहराता है। इसका मतलब वहां पर किसी को समझ नहीं आ रहा है, तभी बार-बार बता रहा है। क्योंकि ?

कुछ शिष्यों अच्छी तरह समझ सकते हैं, कुछ लोग देरी में समझते हैं। कुछ लोग यह पुरानी बात ही है करके सोचते हैं। लेकिन वहां तुम्हें अहंकार का प्रदर्शन नहीं करना है। गुरु द्वारा, प्रकृति उन्हें बातों को दोबारा सुना दे रही है, उसका मतलब वहां पर कुछ लोगों का सही समझ नहीं आया है।

इतना ही नहीं कभी-कभी कुछ छोटी सी बातों पर कोई कहे तो भी, उन्हें प्रशंसा करते हैं, और तालियां बजाते हैं। तब सीनियर लोग समझते हैं कि, इतनी सी छोटी बात पर तालियां बजवा रहे क्या! उन विषयों मुझे पहले से ही मालूम है, मुझे और महान अनुभव आया है, वह इतना महान नहीं है करके मन में सोचता है।

लेकिन गुरु इतनी छोटी से विषय पर तालियां बजवाते हैं। उनके पीछे कुछ कारण रहता है। जैसे एक उदाहरण देखते हैं। देखिए जब एक बच्चा नया-नया चलना सीखा है, लड़खडाता है, तब सब लोग उन्हें तालियां बजाकर प्रोत्साहित करते हैं। लेकिन यह नहीं है कि वह बहुत महान काम किया है, उनके अपने स्तर पर यह बहुत बड़ा काम है।

उसे देखकर अगर पूछेंगे कि मैं तो दौड़ता हूँ, मुझे कोई तालियां नहीं बजा रहा है, अगर कोई ऐसे समझे तो, तब उनसे बड़ा मूर्ख कोई नहीं होगा। क्योंकि उस बच्चा के स्तर के लिए वह महान है।

इसी प्रकार एक नया व्यक्ति जो ज्ञान मार्ग में आया है एक छोटा सा अनुभव भी पूरा सिखने से भी वह महान है। इसलिए गुरुओं ऐसे प्रोत्साहित करते हैं। यह बात शिष्यों को समझना चाहिए।

इसलिए सद्गुरुओं कब क्या करते हैं, किसी को समझ नहीं आता है। इसलिए गुरु को कर्मों पर या बातों पर एक शिष्य को सोचना नहीं है, लेकिन उसके प्रति काम के पीछे मतलब समझाने का कोशिश करना चाहिए। इतना ही नहीं गुरु के हर बात का कुछ मतलब या कारण होता है, यह विषय एक शिष्य को समझना चाहिए।

एक शिष्य पहली बार सुनने से वह श्रवण होता है। दोबारा सुनने पर मनन होता है। फिर भी शिष्य को गहराई में नहीं जा रहा है, इसलिए वह तब तक विनम्रता पूर्वक रहना चाहिए, अहंकार से मनस को दूसरी ओर नहीं लेकर जाना है। शिष्य जो कुछ कर रहा है, सब कुछ गुरु को मालूम रहता है। इसलिए शिष्य को अपना मनस को निश्चल करना चाहिए। जब एक शिष्य का दृष्टि गुरु से नहीं हटता है, निश्चल रहता है। अमूल्य तुल रत्न जैसे गुरु के बातों, एक शिष्य की गहराई में जाते हैं।

4.भरोसा।

एक शिष्य को सद्गुरु के बोधों पर और साधना पर भरोसा रहना चाहिए। उस साधना करते वक्त, गलत साधनाओं पर दृष्टि नहीं देना चाहिए। सद्गुरु जो भी कह रहा है वह परमात्मा ही कह रहे हैं कि भरोसा रखना चाहिए।

जब सद्गुरु कहते हैं की 'श्वास पर ध्यास' ध्यान रखकर ध्यान करना चाहिए, तब वह ना सुनकर कुछ और सुनने पर शिष्य को ही नष्ट होता है।

क्योंकि ? सद्गुरु हर समय अनुभव ज्ञान से ही बताते हैं। इसलिए कोई भी शिष्य को पहले निर्धारण करना है कि वह सद्गुरु है, एक सद्गुरु का लक्षणों को जानना चाहिए, ऐसे सद्गुरु को अंध भक्त रहने से भी शिष्य को नष्ट हो जाता है।

इतना ही नहीं अगर एक शिष्य 'श्वास पर ध्यास' ध्यान को गहराई से अध्ययन करने से मालूम होता है, वह कितना महान है। इतना ही नहीं जब गुरु कहते हैं आप खुद ही देवता है, वह सत्य समझ कर यकीन कर कर देव जैसे बनना है। देवता बनने का ज्ञान कैसे प्राप्त करना है? कौन सा साधना करना है? इनके बारे में सोचना चाहिए, बल्कि मैं क्या भगवान हूँ? मुझे कोई महत्व नहीं है ना? मैं कैसे भगवान हूँ? अगर मैं ही भगवान हूँ, तो यह सारे कष्टों कैसे? ऐसे सोचेंगे निराशा सा रहेंगे, तब जितना भी जन्म ले लो आप देवता नहीं बन सकते हैं।

लेकिन एक जीव होकर जन्म लिया हर मानव देवता बनने के लिए ही भूमि पर आते हैं। वही बात सद्गुरु कहते हैं। जीव का जन्म लेकर एक शिष्य, अनुभवों पाकर, पाठों सीख कर, खुद ही देवता है का नहीं जानने तक, भूमि पर आते ही रहना है। इसीलिए गुरुओं की बातों पर यकीन रखना चाहिए। गुरु वाक्य मेरे लिए वेदों का वाक्य है, कि भरोसा रखना चाहिए, तभी एक शिष्य देवता बन सकता है, दुखों से शाश्वत के लिए मुक्त हो जाता है।

5. विश्वास।

एक शिष्य को गुरु के बातों पर विश्वास होना चाहिए, कारण यही है कि ऐसे महानुभाव के मुंह द्वारा असत्य वाक्य नहीं आते हैं, वह हर वक्त सत्य ही कहते हैं, ज्ञानी बातों ही करते हैं।

शबरी के बारे में सब जानते हैं, शबरी का नाम उनको कैसे मिला है? वह सम, दमादी, शट् संपत्ति, भक्ति से आचारण की थी। शट् संपत्ति मतलब सममं, दममं, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा, समाधानम, यह 6 विषयों को भी वह

भक्ति पूर्वक आचरण करती थी। इसीलिए उनको शबरी नाम दिया गया है।

शबरी का गुरु मातंग महर्षि है। शबरी मातंग महर्षि का आश्रम में दासी थी, लेकिन बहुत विषयों उस गुरु के संगत्य के वजह से, और वहां के भक्तों से, मुनियों द्वारा, वह परमात्मा के बारे में बातों सुनकर, उनको भी परमात्मा के ऊपर विपरीत भक्त हो गई थी। उस भक्ति के वजह से उनको परमात्मा का दर्शन करने का सोचती थी। तब शबरी मतंग मुनि से पूछती थी, गुरु जी आप पढ़े लिखे हैं, साधना करते हैं, चर्चा गोष्ठी करते हैं, मैं तो दासी हूँ ना? क्या मुझे परमात्मा का दर्शन होगी? ऐसी पूछी थी।

तब मातंग महर्षि कहते हैं कि हम तो कुछ ही समय के लिए साधना करते हैं, आप तो हर समय उस परमात्मा का चिंतन के अलावा कुछ नहीं है, मतलब आप निरंतर साधना में हैं, ज़रूर श्री राम जी के रूप में उस परमात्मा आपके पास आएंगे। शबरी गुरु के बातों पर विश्वास रखकर, श्री राम जी का इंतजार की थी, अंत में श्री राम जी का दर्शन मिली थी।

हम सभी लोग भी पत्री जी जो भी कहते हैं, मेरे आत्मा उन्नति के लिए ही कहते हैं, मेरे दुख को निकालने का मार्ग ही ध्यान है । गुरु, ज्ञान प्राप्त करने के लिए ही मुझे इस 'श्वास पर ध्यास' का ध्यान कहे हैं, इन बातों पर हमें विश्वास रखना चाहिए। इस प्रकार पत्री जी के ऊपर विश्वास रखने से ही हम इतना कठोर साधना, इतना श्रद्धापूर्वक, कर रहे हैं। इतना ही नहीं ज्ञान पूर्वक भी हम आगे बढ़ रहे हैं।

इसलिए एक शिष्य को गुरु के बातों पर विश्वास रखना चाहिए। इतना ही नहीं गुरु, क्या शाश्वत है? क्या नहीं है? बोध करने पर नित्य, अनित्य वस्तु विवेक, शिष्य को मिलता है। तब आत्मा को पकड़ना चाहिए? या विग्रह को पकड़ना चाहिए? प्रपंच को पकड़ना या परमात्मा को पकड़ना? यह विषयों शिष्य को सीखना है। इतना ही नहीं गुरु से, क्या काम करना चाहिए? कैसे करना चाहिए? कब करना चाहिए? कैसे बात करना चाहिए? क्या खाना चाहिए? कितना खाना है? कैसे साधना करना है? कितना साधना करना है? ज्ञान को कैसे बढ़ाना है? यह सारे विषयों, गुरु से एक शिष्य सीखना है।

इतना ही नहीं एक शिष्य गुरु के बातों पर दृष्टि रखना चाहिए, बल्कि इनके कर्मों पर नहीं। तभी एक शिष्य बढ़ता रहता है। कुछ शिष्यों समझते हैं कि वह बहुत कुछ जान लिया, बहुत लोगों को क्लास बता रहा हूँ, गुरु जैसे हो गया का भावना रखते हैं, और समझते हैं कि उन्हें सब कुछ मालूम हो गया है। लेकिन अगर शिष्य एक कदम बढ़ता है तब गुरु 10 कदमों आगे बढ़ता है, यह समझना चाहिए।

इसलिए गुरु से जितना भी सीखो, और कुछ सीखने का होता ही रहता है। यह विषय समझकर विनम्रता में रहकर और बहुत कुछ सीखने का प्रयास करना चाहिए।

गुरु के वजह से यह सब जानकर, आचरण में लाने में, एक शिष्य आनंदित रहता है, अनंत की ओर जाता रहता है। इसके अलावा, अनंत लोकों में कैसे रहते हैं उस गुरु के द्वारा समझ सकते हैं। कारण यही है कि एक शिष्य को अधः पाताल लोक जाने से गुरु रोकता है और शिष्य को अनंत लोकों को ले जाता है। अगर सद्गुरु जीवन में नहीं आता है एक शिष्य दुख में भरा हुआ होता है, और 'पुनरपि जननम - पुनरपि मरणम' करता ही रहता है।

इसलिए एक शिष्य को गुरु के प्रति श्रद्धा, विनम्रता, गौरव भाव, भक्ति पूर्वक, कृतज्ञता भाव, के साथ रहना चाहिए। ऐसे रहने से ही गुरुद्वारा अनंत ज्ञान प्राप्त होता है। बाहर के दुनिया में ऐसे विषयों कोई भी आपको नहीं बता सकते हैं। यदि बताते हैं वह सिर्फ पाप और पुण्य के बारे में ही बता सकते हैं। लेकिन सिर्फ एक सद्गुरु ही आपको सत्य लोक पहुंचा सकता है, यह विषय जानना चाहिए।

इसीलिए कोई भी शिष्य अगर आध्यात्मिकता में बढ़ना है तो ? तब सद्गुरु के प्रति इस तरह का व्यवहार रहना चाहिए।

मानव को देवता बनना है तो ?

बहुत लोग कहते हैं कि 'जीवात्मा ही परमात्मा'। 'जीवात्मा ही परमात्मा' मतलब 'मैं ही भगवान हूं' जब कहेंगे, तब आप पूछेंगे मैं क्या भगवान हूं ? मैं तो मानव हूं ना?

इसीलिए श्री शंकराचार्य जी जीवात्मा और परमात्मा के शक्तियों के अंतर बताने के लिए चार उपमानों द्वारा बताते हैं। उनके हिसाब से एक जीव में रहने वाले आत्मा मतलब जीवात्मा में कितना शक्ति है? और परमात्मा मतलब पूरा सृष्टि व्याप्ति हुआ, सृष्टि को चलाने वाला, परमात्मा को कितना शक्ति होता है? को जान सकते हैं।

1.उसने 'परमात्मा को सूर्य से, और जीवात्मा को जुगनू से तुलना किया'।

श्री शंकराचार्य जी परमात्मा को सूर्य भगवान से तुलना किया। सूर्य भगवान सकल जीवों को और समस्त सृष्टि को अपने किरणों द्वारा रोशनी देते हुए, कई लोकोपकार कर्मो कर रहे हैं ।

इनके दिया हुआ रोशनी से समस्त जीवों अपने-अपने कार्यों कर पा रहे हैं। इतना ही नहीं, पेड़ों, पौधे, वृर्षो, सूर्य रश्मि से संयोग क्रिया से धान को, सब्जियों को, फलों को बनाते हैं और उसी से समस्त जीवों जी रहे हैं, इतना महान है सूर्य भगवान ।

इतना ही नहीं इसी सूर्य किरणों की वजह से समुद्र के पानी भाप बनकर फिर से इस भूमि पर जीवों को, और जीव राशियों को बारिश के रूप में उपयोग होता है। सूर्य भगवान इस लोक को इतना अच्छाई करता है। इसीलिए परमात्मा को सूर्य भगवान से तुलना किया है ।

एक जुगनू बहुत कम रोशनी देता है। उस रोशनी दुनिया को उपयोग नहीं होता है। इसी प्रकार जीवात्मा अपना शरीर को खिलाने के लिए इंद्रियों से काम करने के लिए अलावा दुनिया को उपयोग नहीं होता है।

इसलिए परमात्मा को सूर्य भगवान से तुलना किया है, और जीवात्मा को जुगनू से तुलना किया है। इसलिए परमात्मा और जीवात्मा में इतना अंतर

है सोचिए। जुगनू कितना छोटा है लेकिन सूर्य भगवान कितना महान है। इसीलिए श्री शंकराचार्य जी ने परमात्मा को सूर्य भगवान से तुलना किया है। और जीवात्मा को जुगनू से तुलना किया है।

2. 'परमात्मा को एक राजा से, और जीवात्मा को एक सेवक से तुलना किया है'।

एक राजा अपना राज्य में पूरे जनों का पालन करता है, और शत्रु से रक्षा करता है। लेकिन एक सेवक राजा की आज्ञा को पालन करता है। इसी प्रकार परमात्मा सृष्टि को पालन करने वाला है। लेकिन जीवात्मा, परमात्मा का कुछ धर्मों के हिसाब से जीता है ।

यहां पर अगर आप देखेंगे तो परमात्मा पूरी सृष्टि को, मतलब जानवरों को, जीवों को, ग्रहों को, सितारों को, कई लोकों को, अपना प्राण शक्ति से जीवित रखता है। कुछ धर्मों और नियमों को बनाकर, उनके हिसाब से जीवों और जीव राशियों को जीवन करने को किया है।

लेकिन जैसे एक सेवक राजा का आज्ञा को पालन करता है! वैसे ही जीवात्मा, परमात्मा के धर्मों के अनुसार जीना पड़ता है। इसलिए श्री शंकराचार्य जी ने परमात्मा को राजा से, और जीवात्मा को एक सेवक से तुलना किया है।

3.'परमात्मा को समुद्र से, और जीवात्मा को कुआं से तुलना किया है'।

समुद्र से पानी भाप बनकर बारिश होकर आती है। समुद्र के गर्भ में कई जलचरों, कई प्रकार जीवों जीते हैं। उनके साथ रत्नों और मोतियों भी मिलते हैं। और इस समुद्र का पानी, जितना भी भाप बन जाए, समुद्र थोड़ा सा भी कम नहीं होता है। और जितना भी नदियों उससे मिलने से समुद्र ऊपर नहीं उठता है।

जैसे ही समुद्र है, वैसे ही परमात्मा से जितना कुछ सृष्टि हुआ तो भी, जितना जीव राशियों, लोकों, ग्रहों को सृजन होने पर भी परमात्मा घटता नहीं है, और उनमें जितना भी जीवो को मिलन हो जाए, वह बढता नहीं है।

इसी प्रकार एक जीवात्मा को कुआं से तुलना किया है। कुआं सिर्फ घर वालों को उपयोग होता है। कुछ दिनों इस्तेमाल नहीं करने से पानी खराब हो जाता है। इसलिए परमात्मा को समुद्र से, जीवात्मा को कुआं से तुलना किया

है।

जैसे कुआं सिर्फ घर वालों को उपयोग होता है एक जीवात्मा अपना परिवार के लिए उपयोग रहता है। इसलिए जीव को जीवात्मा नहीं रहकर, परमात्मा बनने को कहने का कारण यही है।

4. 'परमात्मा को मेरु पर्वत जैसे, और जीवात्मा अनु समान जैसे, कहा है'।

सोचिए मेरु पर्वत और अनु में कितने अंतर है? एक प्रकार से नागलोक और एक लोमड़ी को तुलना जैसे है, इतना फर्क है।

मेरु पर्वत कितनों को आश्रय देती है। वैसे ही परमात्मा भी कितनों को अपने सृष्टि में आश्रय देते हैं, उनका बढ़ोतरी के लिए, जरूरतों के लिए दिया है। और इस अनु जैसे जीवात्मा को मानव के शरीर में रहकर उस शरीर के चलने के लिए ही काम करती है।

मेरु पर्वत में देखिए, इतना सारा वृक्षों होते हैं, कितने जीवों वहां रहते हैं। उनके लिए कितने लाभ होते हैं।

इसी प्रकार अनु समान जीवात्मा एक सिरा से भी कम होता है। अनु से भी छोटा होने वाला इस जीवात्मा, जीवों के शरीर में रहकर सिर्फ उस जीवों को ही चला सकता है।

मगर अनंत सृष्टि को चलाने वाला परमात्मा है, लेकिन सिर्फ उन जीवों के शरीरों चलाने वाला जीवात्मा है। इसलिए श्री शंकराचार्य जी परमात्मा को, और जीवात्मा को कितना फर्क है, इन उपमानों द्वारा विवरण किया है।

यह सब बताने का कारण क्या है? जीवों मतलब मानव को अहंकार नहीं बढ़ने के लिए ही! अपना स्थिति खुद को बताने के लिए ही! ऐसे योग मार्ग में आकर, तत्व को समझेगा। तब उस तत्व दृष्टि से ही देखेगा। इसलिए अगर जीव को देवता बनना है, तो तत्व दृष्टि होना ही चाहिए! तभी वह बढ़ सकता है।

अभी तक एक जीवात्मा और परमात्मा के भेदों को देखे हैं, लेकिन दोनों में तत्व एक ही है यह भी देख लेते हैं ।

देखिए सूर्य भगवान में और जुगनू में अग्नि तत्व एक ही है, यह साधक को जानना चाहिए। सूर्य भगवान में अग्नि तत्व असीमित है। जुगनू में अग्नि तत्व सीमित ही है। लेकिन दोनों ही अग्नि तत्व में ही है। यह ध्यान साधना में आकर ज्ञान पाने के बाद तत्व दृष्टि से देखने पर दोनों में अग्नि तत्व एक ही है का समझ आता है।

इसी प्रकार एक राज्य को खोने के बाद भी राजा जीव ही है, काम से निकलने के बाद भी सेवक जीव ही है! मतलब दोनों ही जीवो हैं! मतलब परमात्मा, जीवात्मा दोनों ही भगवान है, दोनों ही परमात्माओं हैं, यह समझ आता है ।

इसी प्रकार परमात्मा से ही जीवात्मा आया है, इसलिए दोनों एक ही है का तत्व दृष्टि आना चाहिए ।

इसलिए जीवात्मा, मतलब मानव, बाहर के दृष्टि में अहंकार को नहीं बढ़ाना के लिए ही इन उपमानों को बताते हैं। वैसे ही एक साधक का तत्व दृष्टि कैसे बढ़ता है यह श्री शंकराचार्य जी ने कहा है।

इसी प्रकार समुद्र में भी पानी है, कुआं में भी पानी है! दोनों में ही पानी ही है! इस तत्व दृष्टि आने से दोनों में रहने वाला जल तत्व एक ही है का समझ आता है।मतलब समुद्र में भी पानी और कुआं में भी पानी है। दोनों जल तत्व ही है। जब तत्व दृष्टि से देखते हैं दोनों में जल तत्व को देखना चाहिए। यहां पर छोटा, बड़ा नहीं, वैसे ही मेरु पर्वत और अनु में दोनों ही भूमि तत्व है। एक बड़ा है दूसरा सुक्ष्म हो सकता है। लेकिन दोनों को तत्व एक ही है, भूमि तत्व।

परमात्मा और जीवात्मा एक ही है क्यों कहते हैं? क्योंकि परमात्मा में जो तत्व है और जीवात्मा में वह तत्व एक ही है! यह बताने के लिए इतना उपमानों हमें बता चुके हैं। मानव को तत्व दृष्टि कैसे देखना है उपमानों द्वारा हमें बताए हैं।

सबसे पहले अहंकार को नहीं बढ़ना चाहिए। मतलब मैं ही भगवान हूं का अहंकार नहीं आना चाहिए। ध्यान साधना कर कर योगत्व में बढ़ते हुए, उस तत्व को देखना चाहिए।

सूर्य भगवान में, और जुगनू में रहने वाला अग्नि तत्व को, और ऐसे ही सेवक और राजा दोनों जीवात्मा ही है, ऐसे ही समुद्र में और कुआं में भी दोनों का जल तत्व ही है, इसी प्रकार मेरु पर्वत और परमाणु में दोनों भूमि तत्व एक ही है, यह जानना चाहिए।

इस प्रकार श्री शंकराचार्य जी ने एक ही वस्तु को बाहर के दृष्टि से, जब ज्ञान नहीं है, देखने का, अंतरों में तत्व दृष्टि से, जब ज्ञान होता है, को कैसे देखना है हमें बताया है।

इस प्रकार समुद्र से राजा से, पर्वत से, सूर्य भगवान से तुलना कर कर, परमात्मा का महानता को बताया है। इसी प्रकार जुगनू, कुआं, सेवक, अनु को जीवात्मा से तुलना कर कर बताया है।

इसलिए एक योगी ध्यान साधना करते-करते अपना दृष्टि को बदलते रहना चाहिए, धीरे से तत्व दृष्टि से देखना चाहिए। ऐसे ही उनमें तत्व बड़ा? या छोटा? नहीं, सिर्फ तत्व दृष्टि चाहिए।

इसी प्रकार पौधे किस तत्व में है? भूचरों, पक्षियों, जानवरों, मानव यह सब किस-किस तत्व में है, जानना चाहिए। इसलिए अगर एक साधक का ज्ञान बढ़ाना है तो? न केवल बाहर का दृष्टि उसका तत्व दृष्टि भी होने से ही अंदर में रहने वाला परमात्मा का दृष्टि जान सकते हो।

इसलिए जानना चाहिए कि बिना तत्व दृष्टि एक साधक आगे नहीं बढ़ सकेगा।

और गहराई में जाने से, तब परमात्मा उसकी अपनी सृष्टि में एक-एक में, एक उपयोग के लिए, एक तत्व को ज्यादा रखा गया है, एक में कम रखा गया है, कि विषय को जानना चाहिए।

सूर्य भगवान में अग्नि तत्व क्यों है? लोकों का भलाई के लिए, और उनकी रक्षा के लिए।

इसी प्रकार समुद्र में पानी ज्यादा क्यों है? इस समुद्र का पानी ही बारिश के रूप में इस भूमि पर धान उगाने के लिए, पौधे के लिए, वृर्षो के लिए, जीवों का भूख मिटाने के लिए, प्यास बुझाने के लिए, सबको रक्षा करती है।

इसी प्रकार भूमि पर क्रम शिक्षण रहने के लिए एक कोई राजा हुआ है। इसीलिए सब लोग राजाओं नहीं बन सकते हैं। इसी प्रकार काम करने वालों रहना ही है तो सेवक बने हैं। लेकिन हम जानते हैं कि यहां पर तत्व दृष्टि से देखने में दोनों एक ही है।

इसी प्रकार मेरु पर्वत, अनु को देखने पर, उनके तत्वों को, और उनके शक्तियों हमें समझ आता है।

सूर्य भगवान, समुद्र, या मेरु पर्वत, या राजा, एक जैसे उपयोगी नहीं है, जिसको जो शक्ति है, वही प्रपंच को देते हैं। ऐसे ही साधकों भी उनका ज्ञान और प्रतिभाएं, संसाधनों को, अगर इस प्रपंच को दे सकते हो, तब परमात्मा स्थाई तक पहुंच सकते हैं।

इसीलिए जीवात्मा, मतलब मानव, को जीवात्मा ही नहीं रह जाना चाहिए। इसलिए सही साधना कर कर, सत्य ज्ञान प्राप्त कर कर, तब मानव को परमात्मा बन सकता है।

इसके अलावा सिर्फ अपने कर्मों करते हुए, मैं देवता हूं कहने से नहीं होगा।

वेदों में 'अहम ब्रम्हास्मि' कहा गया है। इस सत्य को मतलब मैं ब्रम्हा हूं को जानने के लिए ध्यान साधना ही एक मार्ग है। मतलब साधकों का बाहर का दृष्टि जब अंदर होगा तभी उसका तत्व दृष्टि आएगा। तभी दुनिया के लिए कुछ देना है का सोच आएगा। ऐसे जब आप को देने पर ही, सृष्टि से आप पाने का अर्हत आता है।

कुछ भी कहने से, जितना भी कहने से, अगर साधना और ज्ञान नहीं होगा, तब एक जीव की तरह रह जाएंगे, द्वैत में रहेगा। लेकिन साधना और ज्ञान प्राप्त करने पर जीव को देवता बनने का प्रयत्न करते-करते अद्वैत होकर, परमात्मा जैसे बनकर जी सकते हैं। मानव को, देवता बनेगा ।

अगर विशेष ज्ञान प्राप्त करना है तो?

ध्यान में आने वाले लोग कुछ लाभों पाकर, उन लाभों को सब लोगों को पहुँचाने के लिए, ध्यान बताते रहते हैं। लेकिन सब लोग ध्यान करते हैं क्या? नहीं ना।

पत्री जी ने भी कई लाख लोगों को ध्यान सिखाया है। इतना ही नहीं पुस्तकों द्वारा, वीडियो द्वारा इसी सत्य को सबको बोध किया है।

लेकिन कुछ ही लोग आचरण करते हैं? बहुत लोग आचरण नहीं कर पा रहे हैं। इस सत्य और धर्म को कुछ लोग को जानने का इच्छा ही नहीं होता है। लेकिन कुछ ही लोग को अवगाहन होता है।

इसका मुख्य कारण इंद्रियों पर नियंत्रण नहीं होना, मतलब मनस को नियंत्रण में नहीं कर पाना ।

इसलिए मनस कैसे रहने से सत्य को ग्रहण कर सकता है! धर्म को आचरण कर सकता है! यह अभी जानते हैं ।

मुख्यतः मनस तीन प्रकार का होता है।

1. मलीन । 2. शुद्ध। 3. विशुद्ध ।

यहां पर जब मनस मलीन होता है, उसका प्रवर्तन कैसा होगा, शुद्ध मनस का प्रवर्तन कैसे होगा, विशुद्ध मनस का प्रवर्तन कैसे होगा, यह सब जान लेते हैं।

1.मलीन मनस :-

पहले मलीन मनस वाला का प्रवर्तन को जानते हैं। ऐसे लोगों को जो भी दिखा उसको चाहते हैं। यह नहीं देखते हैं कि वह आवश्यक है? या नहीं? और उनको खरीदने का ताकत है? या नहीं? यह भी सोचते नहीं है। इतना ही नहीं, जो भी दिखा वह चाहते हैं, बेकार बातों को सुनते हैं, और बेकार बातें करते हैं, बेकार चीजों खाते हैं, अपने ताकत के ऊपर भोगों चाहते हैं।

इस प्रकार मलीन मनस जो कर्मों नहीं करना, मतलब मलीन को देखना, मलीन बात करना, मलीन विषयों सुनना, मलीन आलोचना करना, यह सब करता है ।

ऐसे मलीन मनस मानव को कष्टों में लाती है। ऐसे लोगों दूसरों का सेवा करने वाले हाथों तो से मारपीट करने केलिए, हाथ पैर काटने के लिए उपयोग करते हैं। इसी प्रकार अच्छे प्रदेशों मैं जाने वाले पैरों को, व्यभिचारी गृहों को, शराब दुकानों को ले जाते हैं।

मलीन मनस वाले भगवान महान कहते हैं, पूजा करते हैं, लेकिन गलतियां करते रहते हैं, झूठ बोलते हैं, दूसरों को निंदा करना छोड़ते नहीं है।

लेकिन मनस क्यों मलीन होता है? मतलब निशिद्ध वस्तुओं को खाने से, और निशिद्ध कार्यों करने से। ऐसे लोगों को ध्यान साधना या धर्म या सत्यम को जानने में अवगाहन नहीं होता है।

कई हजारों लोग पत्री जी का ज्ञान यज्ञ में आते रहते हैं। इसमें कुछ लोग देखने के लिए, कुछ लोग साधना करने आते हैं। लेकिन देखने आने वाले उनका मलीन मनस के वजह से वहां पर ध्यान साधना नहीं कर पाते हैं, बताने वाले ज्ञान स्वीकार नहीं कर पाते हैं ।

मलीन मनस को अच्छाई स्वीकारने का शक्ति नहीं होती है। इसीलिए पापों ही करते हैं, और इस ध्यान मार्ग में नहीं आ सकते हैं। मलीन मनस में चित्त शांति नहीं होती है। अगर चित्त शांत नहीं रहेगा, साधना नहीं कर पाएंगे। अगर चित्त को प्रशांत रखना है, तो मनस को शुद्ध करना चाहिए।

इसलिए अष्टावक्र, बुद्ध भगवान जैसे लोग विषयों पर आशक्ती कम करने को कहते हैं। मतलब प्रपंचिक विषयों को विष मानना चाहिए। विषय कारण ही साधना मार्ग में वह बहुत बड़े अवरोध है। इतना ही नहीं वह इंद्रियों को मलीन बनाते हैं।

इसलिए अगर मनस को शुद्ध रखना है तो कठोर ध्यान साधना करना चाहिए। और सात्विक शाकाहार भोजन खाना चाहिए।

2.शुद्ध मनस :-

ध्यान में मनस को शुद्ध करने वालों को पाप क्या है, पुण्य क्या है, वह जानते हैं। इसलिए पाप नहीं करते हैं और पुण्य करते हैं।

इस प्रकार जब मनस शुद्ध होने से, वह पुण्य कर्मों मतलब अच्छे कर्म करते हैं। शुद्ध मनस वाले सब में भगवान है करके अनन्य भक्ति में आते हैं।

ऐसे अनन्य भक्ति में आकर पुण्य कर्मों को निष्काम कर्मों करते हुए कर्म योग में आते हैं। ऐसे कर्म योग में आकर कर्म फल त्याग कर कर पुण्य कर्मों को कर्म योग में बदल जाते हैं। अंत में वह यज्ञ कर्म होता है, सत्कर्म होता है। तब वह ध्यान में आते हैं।

पहले दिनों में राघव राज जी को भी वेंकटेश्वर स्वामी से बहुत भक्त था। जो भी करते थे वह बालाजी कहते हुए करते थे। दान धर्म करते थे। उनके वजह से ही अच्छा सदगुरु पत्री जी मिला है। इनके द्वारा सत्य मिला है, धर्म मिला है।

लेकिन शुद्ध मनस वाले पहले ठीक होते हैं, बाद में उन जैसे लोगों के लिए काम करते हैं। ऐसे 'सर्वे जन सुखिनो भवंतु' न केवल कहना, आचरण में लाते हैं, गुरु की कृपा से सीखते हैं।

3. विशुद्ध मनस :-

कठोर ध्यान साधना द्वारा मनस विशुद्ध तत्व में आता है मतलब विशेष शुद्ध तत्व में आता है, तब यह अरिशठ्वर्गो अपना नियंत्रण में आते है।

कारण यही है कि, सद्गुरु के पास जाने से, पहले विषय आपको कहते हैं कि, आप जीव नहीं है, आप ही देवता है। बाद में न केवल आप ही, इस सृष्टि में सारे जीवों ही देवता समान है, ऐसे कहते हैं।

इस प्रकार गुरु 'अहम् ब्र्मास्मि' को सिखाते हैं। बाद में 'तत्वमसी' कहते हैं। इसके बाद 'सर्वं खल्विदम ब्र्म' मतलब इस पूरा सृष्टि ही ब्र्म है। इस प्रकार विशुद्ध तत्व में आने से विशेष ज्ञान पाते हैं।

विशुद्ध तत्व में आने से, मैं का कुछ नहीं होता है जो कुछ है सब भगवान ही है, को जानते हैं। इतना ही नहीं मैं किसको दे रहा हूं? किस से ले रहा हूं? यह भी जानते हैं।

इस सृष्टि में, मैं आत्मा होकर, इस शरीर को ओढ़ कर आया हूं, यह विषय जानते हैं । मतलब न केवल मैं, शांति से जीना नहीं, ज्ञान पाना ही नहीं, धर्मबद्ध से जीते हुए, इस सृष्टि में हर कोई किस लिए आए हैं को जानते हैं।

मानव जन्म का अर्थ क्या है? जीवन का परमार्थ क्या है? इस परमात्मा को पाने के लिए, अंतिम स्थान पहुंचने के लिए, लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए,

हमें ध्यान साधना करना चाहिए, यह विषय हम जानते हैं।

इसीलिए पत्री जी जैसे सद्गुरु को आश्रय कर कर, ध्यान साधना कर कर, विशेष साधना कर कर, विशुद्ध तत्व में आकर, मैं आत्मा हूं को जानते हैं ।

विशुद्ध तत्व में इच्छाओं कुछ नहीं होते हैं, कारण जिसको जो भी चाहिए, जिसको जो भी अर्हत है, वह सब प्रकृति द्वारा प्राप्त करते रहते हैं।

इस प्रकार विशुद्ध तत्व में आने के बाद, मुझे कुछ मांगने का और कुछ नहीं है, जो मुझे मिलना है वह सब आ चुके हैं, समझकर जीव होकर आने वालों को देवता बनता है। ऐसे ज्ञान बढ़ाते बढ़ाते मैं ही देवता हूं, मैं ही भगवान हूं, अहम् ब्र्मास्मि के तत्व में आते हैं।

इतना ही नहीं जितना ज्यादा विशुद्ध तत्व में होते हैं! उतना ज्ञान बढ़ता रहता है, आत्मा अनुभूति पाते हैं।

देखिए श्री शंकराचार्य जी 14 वर्ष के उम्र में आत्मा अनुभूति पाया है, मतलब आत्मा का दर्शन हुआ है। मतलब बचपन से ही ज्ञान को बढ़ाया है। और श्री विवेकानंद जी 28 साल में आत्म दर्शन हुआ है। बुद्ध भगवान 40 साल में आत्म दर्शन प्राप्त किया है।

इस प्रकार विशेष ज्ञान पाने वाले कैसे होते हैं? एक शंकराचार्य जैसे होते हैं, एक विवेकानंद जैसे, मतलब एक बुद्ध जैसे होते हैं। मतलब वह सिर्फ लोक कल्याण के लिए ही कष्ट करते हैं। विश्व के लिए ही कष्ट करते रहते हैं। पत्री जी ने भी ऐसे ही कष्ट किया है। आपको अगर उनके जैसे ज्ञान बताने का इच्छा होता है, मतलब आप भी विशुद्ध तत्व में है। न केवल मुझे ठीक होना है, सब लोग मेरे साथ ठीक रहना है, का इच्छा होना चाहिए ।

इसलिए हमारे सामने वाले लोगों को अगर हम उपमान के तरह ले सकते हैं, हमें भी बढ़ने का अवसर मिलता है। और हम में अगर कुछ बुरे हैं तब उनको निकाल लेते हैं। अच्छाई को बढ़ाते हैं। ऐसे बढ़ाने पर ही ज्ञान बढ़ाते रहता है।

मानव को आचरण करने वाले कुछ धर्मों!

हम सब हर दिन कुछ ज्ञान के विषय जान रहे हैं। बहुत दिनों से जान रहे हैं और जानने के लिए बहुत है। मतलब यह ज्ञान अनंत है। इससे हमें मालूम पड़ रहा है कि ज्ञान सीखने के लिए हम आत्माओं को एक जन्म काफी नहीं है, कई जन्मों लग जाएंगे।

अगर श्रद्धा, दृढ़ निश्चयता होने पर 100 जन्मों में सीखने वाले विषयों को, कम जन्मों में ही सीख सकते हैं। कोई भी मनोस्थिति में न रहकर, आत्म स्थिति में रहने पर ज्ञान प्राप्त करने का इच्छा बढ़ता रहता है।

हम सब लोग सुबह-सुबह उठकर ज़ूम में भाग लेकर, ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। इसका मतलब सब लोग आत्म स्थिति में बड़े हो चुके हैं। आत्माओं का विकसित के लिए, आत्मा का उन्नति के लिए, मोक्ष के लिए प्रयत्न करने वाले हैं, जरूर यह कह सकते हैं। उन सब लोगों को न केवल तीव्र इच्छा है, लेकिन उसको आचरण में कर रहे हैं। किसी को भी इतना गहराई में, इतना महानता से ज्ञान को जानने का अवसर, सिर्फ इस ज़ूम में ही मिलता है। और इतने सालों से जूम को चला रहे हैं, मतलब आत्मज्ञान के बारे में कितने नए विषयों जान रहे हैं, यह समझिए।

ऋषि का ऋण को चुकाने का मतलब उन ऋषियों ने उपनिषदों द्वारा, शास्त्रों द्वारा दिया हुआ ज्ञान को हम अध्ययन कर कर, उस ज्ञान को दूसरों को बताने पर ही, ऋषि का ऋण, हम चुका सकते हैं।

आज हम उसको सत्य माना है। इसलिए शारीरिक और मानसिक स्थरों का किताबों को पढ़ने का मन नहीं लगता है। सिर्फ एक आत्मा के बारे में या आत्मज्ञान के बारे में कहने वाले किताबों पर ही आशक्ति होता है। हमारे सारे विचारों सिर्फ आत्मज्ञान पर ही है, और आत्म के उन्नति पर ही, विषयों को प्रस्ताव करते हैं।

मतलब जबकि हम आत्मा के स्वरूप ही है, मनस के वजह से हम देवताओं जैसे नहीं बन पा रहे हैं। यह सब जानकर मनस को प्रामुखता कम कर

कर आत्मा को प्रामुखता बढ़ाते हैं।

अभी अगर हम एक क्लास देते हैं, मतलब हमें समझना है कि इस प्रकृति ने हमें अवसर दिया है। यह भाव रखना चाहिए। शुरूआत में जब राघव राव जी मुझे क्लास बताने को कहते थे, मुझे क्या आता है, का सोचता था। इससे पहले कुछ विष्णु सहस्त्रनाम, ललिता सहस्रनाम पारायण करती थी। लेकिन मुझे संस्कृति न जाने पर उनमें शब्दों का अर्थ मालूम नहीं था। इसलिए मैं नहीं कह पाऊंगा का सोच रखती थी।

लेकिन जब पत्री जी और राघव राव जी कहते थे कि तुम कर सकते हो, तब मुझे कुछ मालूम नहीं है कहकर अपने आप को कम समझती रही थी। लेकिन जब ध्यान साधना कर रही थी, मुझे लगा है कि सिर्फ क्लास लेने पर ही मुझे मालूम पड़ेगा कि मैं ले पाऊंगा कि नहीं। तब से मैं क्लास लेना शुरू किया हूं। तभी मुझे लगा कि जब एक गुरु कहते हैं, मुझ में वह काबिलियत रहने से ही वह कहेंगे ना?

क्योंकि? पति जितना भी महान है मुझे मानने की तैयार नहीं थी। लेकिन धीरे-धीरे राघवराव जी का महानता मुझे समझ आई थी। तब से मैं शुरू कर कर, जानने वाले विषयों को बताना शुरू करने से, मुझे अब आदत हो गया है। इस प्रकार पुस्तकों से पढ़कर पत्री जी का बोधों को सुनकर, करते हुए, सब को अच्छा लगने से मुझे और क्लास में बताने का आशक्ति बड़ी है। इतना ही नहीं और ज्यादा सीखने को, और अच्छा क्लास बताना है का दृढ़ निश्चयता बढा है।

पहले मैं सीखूंगा तभी मैं बता सकता हूं, यह सोचकर ध्यान साधना और ज्यादा कर कर किताबें पढ़कर क्लास लेने का अवसरों को उपयोग नहीं करती थी। पत्री जी, स्वाध्याय का इतना ज़ोर क्यों देते हैं, तब मुझे समझ आई थी।

अगर उस स्वाध्याय ही नहीं होती तब आज हम कुछ भी नहीं जानते होंगे और ना ही सीख रहे होते! आत्माएं जो है हम, मानव के तरह ही जीते रहते थे ।

जब मन का शुद्धिकरण करते हैं! सात्विक गुण से शुद्ध सात्विक गुण में आते हैं। तब साधना पर श्रद्धा, ज्ञान पर इच्छा बढ़ता है। तभी हम आत्माएं, परमात्माओं की ओर बढ़ते हैं। मतलब उन लक्षणों को प्राप्त करते हैं। अपने व्यवहार में बदलाव लाते हैं। इतना ही नहीं हम परमात्माओं भूमि पर रहते हुए करने वाले धर्मों के बारे में जानेंगे।

क्योंकि? मानव जन्म को कुछ धर्मो है, जो किसी और जीव को नहीं है। हर दिन हम बात करने वाले विषयों सारे आचरण में रखने वाले ही है। तब हम उन धर्मों में से कितने आचरण में ला रहे हैं? और कितने लाना है। यह विषयों जानना चाहिए। क्योंकि हर एक आचरण में नहीं लाने पर, फिर से भूमि पर आना ही है। क्योंकि सिर्फ एक मानव जन्म को ही ज्ञान प्राप्त करने का अर्हत होता है।

इसीलिए मानव जन्म मिलना ही बहुत महान है, श्री शंकराचार्य जी विवेक चूड़ामणि में कहते हैं।

इस प्रकार मानव जन्म लेने वाले, धर्मों को पूरी तरह आचरण करना ही है। मतलब क्या क्या आचरण में लाना है, अभी जानते हैं।

मुख्यतः

1. परब्र्म्ह को आश्रय करना चाहिए।
2. वेदों का ज्ञान जानना चाहिए।
3. मतलब लोक कल्याण कर्मों करना चाहिए ।
4. आत्मा कर्मो मतलब मुक्ति कर्मों करना चाहिए।

यह चारों हर वक्त आचरण करना चाहिए। प्रापंचिक जीवन में रहने वाले को इस आध्यात्मिकता के बारे में नहीं जानते हैं।

हम सब लोग आध्यात्मिक मार्ग में आए हैं, इसलिए थोड़ा-थोड़ा जानते हुए, जो भी आवश्यक है उसे आचरण में लाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

आध्यात्मिक जीवन में पहले पर ब्र्म्ह को आश्रय करना चाहिए।

1. परब्र्म्ह को आश्रय करना चाहिए :-

पर ब्र्म्ह मतलब और कोई नहीं है इस सृष्टि का सृष्टि करता ही है।

वही परमात्मा है, विश्वात्मा, मूलात्मा, भगवान कहते हैं। पत्री जी 'आत्मा ही पर ब्र्म्म है' कहा है अपने ज्ञान नवरत्नों में।

इस पर ब्र्म्म से ही यह पूरी सृष्टि का पालन हो रहा है। जीवों, जीव राशियों, नदियों, पर्वतों, सब कुछ उसी परब्र्म्म ने ही सृष्टि किया है ।

यहां पर, "पर" का मतलब जो नहीं दिखता है, और "ब्र्म्म" का मतलब सबसे महान है। इसलिए "ब्र्म्म" से बड़ा महान कोई नहीं है।

उस परब्र्म्म का चैतन्य शक्ति से ही इस सृष्टि का पालन हो रहा है, यह विषय इस आध्यात्मिकता में गुरुओं का पहला बोध होता है।

इतना ही नहीं सब लोगों आराधना करने वाले देवताओं को तीन करोड़ देवताओं को, भी शक्ति देने वाला वही परब्र्म्म है। यह विषय जानना चाहिए। इसीलिए जो भी 'श्वास पर ध्यास' रखकर ध्यान करते हैं! उस परब्र्म्म का शक्ति पा सकते हैं, पर ब्र्म्म को जान सकेंगे।

लेकिन इस परम ब्र्म्म के सिवाय देवताओं को आराधना करने से, भोगों ही प्राप्त होगा। लेकिन उस परब्र्म्म को आराधना करने से, मतलब ध्यान करने से मोक्ष ही पाते हैं, कहते हैं परम गुरुओं ।

इसीलिए ब्र्म्मा के महानता के बारे में जानने वाले, प्रापंचिक विषयों को प्रामुखता नहीं देते हुए, इस प्रपंच को शक्ति देने वाले परब्र्म्मा को प्रामुखता देते हैं। लेकिन यह सिर्फ आध्यात्मिकता में आने वाले लोग ही कर सकते हैं। इसीलिए कहते हैं कि, कोई भी ब्र्म्म के बारे में जानना चाहिए।

देखिए अगर कलेक्टर ऑफिस में एक सिपाही को पकड़ने से काम नहीं होगा, कलेक्टर को पकड़ने से ही काम होता है। इसी प्रकार देवताओं को नहीं, परम ब्र्म्म का आश्रय करना, मतलब ध्यान करना चाहिए। यही है मानवों को जानने वाला पहला धर्म।

2. वेदों का ज्ञान जानना चाहिए :-

वेदों का ज्ञान मतलब सत्य का ज्ञान मतलब आत्मा का ज्ञान। यहां पर सत्य का मतलब नित्य, शाश्वत, हर समय रहने वाले, जो परिवर्तन नहीं होता है। इन सारे लक्षणों होने वाले ही सत्य कहते हैं। ऐसे लक्षणों इस सृष्टि में सिर्फ

और सिर्फ एक परब्र्म्म में ही है। इसलिए सिर्फ परम ही सत्य है। कारण यही है कि वह सृष्टि नहीं हुआ है, उनका अंत नहीं है और परिवर्तन नहीं होने वाला है, शाश्वत रहने वाला है। उतना महान है पर ब्र्मा।

यह सारे विषयों वेदों में या वेदों का सार उपनिषदों में भी दिया हुआ है। इसीलिए उन्हें अध्ययन करने को कहते हैं।

देखिए कृत युग में, त्रेता युग में, सद्गुरुओं और ऋषियों ने शिष्यों को इस ज्ञान को बताते थे। यह सारे विषयों व्यास भगवान द्वारा लिखवाया गया है। वेदों और उपनिषदों के रूप में।

ऋषियों ने वेदों द्वारा, और उपनिषदों द्वारा इस सृष्टि के रहस्यों को मतलब सृष्टि में क्या-क्या है, उनको कैसे पा सकते हैं। यह सब बोध किए हैं। इतना ही नहीं, और बताया है कि इस सृष्टि का प्रतिरूप ही है मानव शरीर ।

और यह सारे विषयों वेदों, और उपनिषदों में लिखा गया है। उन विषयों को नहीं पढ़ेंगे तो, हम इस सृष्टि के बारे में नहीं जानेंगे और नहीं समझेंगे।

चारों वेदों का सार पत्री जी के पुस्तकों में है। अभी राघव राव जी भी अपनी किताबें में इसी ज्ञान को देने के लिए बहुत प्रयास कर रहे हैं। वह कभी-कभी बीच रात में उठ जाते हैं। क्यों? जब मैं पूछता हूं, वह कहते हैं कि मुझे करेक्शन करना है। कल कर सकते हो ना, अगर मैं कहूंगा? तो वह कहते हैं नहीं नहीं अभी करना, को कहते हैं। उतना तपन रखते हैं। वह सब को संभव नहीं होता है।

50 साल में मैं उनके साथ हूं, फिर भी मैं उनके स्थाई तक पहुंच नहीं पा रहा हूं। कारण उनके आत्मा का स्थिति ऐसा है।

इसलिए अगर सत्य ज्ञान को सीखना है? तब वेदों का अध्ययन करना चाहिए।

तभी इन वेदों का ज्ञान सब समझ सकते हैं। इन वेदों का ज्ञान सीखना मानवों का एक और धर्म है।

3.यज्ञों, मतलब लोक कल्याण कर्मो:-

लोगों को अच्छे के लिए कुछ लोग मिलकर करने वाला काम को यज्ञ कहते हैं। उसमें सबसे महान यज्ञ 'ध्यान यज्ञ' ।

कारण यही है कि, ध्यान करने वालों में बहुत बदलाव लाता है। उनका मनस को अच्छी तरह बदल जाता है। इसलिए वह सबको सेवा करते हैं, सबको लाभ मिलने वाला काम करते हैं, सबको ध्यान और ज्ञान बांटने को प्रयत्न करते हैं। सब में परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं। ऐसे ना केवल खुद बदलते हैं सब में भी बदलाव लाने का प्रयत्न करते हैं। इसलिए ध्यान यज्ञ ही इस दुनिया में सबसे महान यज्ञ है।

हमारे लोग यह सब क्यों कर रहे हैं? मतलब दुनिया में इस ज्ञान के बारे में सबको जानने के लिए ही। उसके लिए सब लोग मोबाइल्स उपयोग कर रहे हैं, इस ज्ञान के बारे में वीडियो और सारे यूट्यूब और व्हाट्सएप या फेसबुक या इंस्टाग्राम में रखते ही नहीं, शॉर्ट्स भी रख रहे हैं। एक संदेश का सार को एक मैसेज के सूक्ष्म रूप में रख रहे हैं। यह सभी काम सबको ज्ञानी बनने के लिए कर रहे हैं ।

यह सब निस्वार्थ से, मैं कर रहा हूं का अहंकार नहीं रखकर, मुझे नाम कमाना है का इच्छा नहीं रखकर, सिर्फ परोपकार दृष्टि से ही कर रहे हैं। ऐसे सब लोग मिलकर एक यज्ञ कर रहे हैं।

इसी तरह जो भी आप पा रहे हैं अगर निस्वार्थ से दुनिया को, दूसरों को बांट सकते हो, तब उससे बड़ा यज्ञ नहीं है।

इस प्रकार लोक कल्याण के लिए कृषि करना मतलब यज्ञों करना मानवों का एक और धर्म है।

4.आत्मा कर्मो मतलब मुक्ति कर्मो करना चाहिए:-

मानव लोग करने वाले कर्मो तीन प्रकार के हैं ।

1.पाप कर्मो । 2.पुण्य कर्मो । 3.आत्म कर्मो मतलब मुक्ति कर्मो।

पाप कर्मो करने पर दुख मिलता है, पुण्य कर्मो करने पर भोग मिलता है, लेकिन दोबारा जन्मों लेना पड़ता है। लेकिन मुक्ति कर्मो करने पर मतलब

आत्म कर्मो करने पर मोक्ष ही मिलेगा, आगे जन्मों नहीं होता है।

इसलिए आत्मा को लाभ पाने वाले ध्यान संबंधित सेवाओं ही मुक्ति कर्मों कहते हैं ।

मतलब ध्यान करना, ध्यान सिखाना ज्ञान संबंधित कार्यक्रमों को उपलब्ध करवाना, उनको सहाय करना, ऐसे कार्यक्रमों को धन रूप में, या तन से सहाय करना, यह सब मुक्ति कर्मों में ही आते हैं। लेकिन यह सब कर्मों निष्काम, मतलब कुछ फल नहीं आशा कर कर, करना चाहिए।

इसलिए भागवत गीता में कहा गया है कि सिर्फ कर्म करने का आपको अधिकार है, फल का आशा करने का अधिकार नहीं है ।

इसलिए जो भी निष्काम से आत्मा कर्मों करते हैं, वह लोग मुक्ति पाते हैं। इसलिए मुक्ति कर्मों भी मानवों का धर्म में एक और धर्म है, यह जानना चाहिए।

इसलिए मानव को आचरण करने वाले धर्मों में यह चार धर्म मुख्य है। यह जानना चाहिए। कारण यही चार कर्मों मानवों को मोक्ष मतलब जन्म राहित्य स्थिति प्राप्त कर सकते हैं।

‘अज्ञानियों के प्रकारों’ ।

ज्ञान बहुत कीमती विषय है। ज्ञानी लोगों को इस दुनिया में महान, गौरवशाली, देवताओं जैसे भी मानते हैं ।

लेकिन अज्ञानी को इस ज्ञान का महत्व नहीं जानते हुए पैसों, पदों, डिग्रियों ही महान मानते हैं। लेकिन यह सब तत्कालीन है, लेकिन ज्ञान ही शाश्वत है। क्योंकि जितना ही जन्मों को लेने पर भी, वह साथ में आता ही रहता है ।

एक ज्ञानी, गुरु के पास विनम्रता से विद्या अभ्यास कर कर, खुद कौन है जानकर, यह सृष्टि पूरा परमात्मा है को जानकर, हर समय आनंद स्थिति में रहता है ।

इसलिए अज्ञानी कैसे रहता है? क्यों अज्ञानता में रह जाता है? अगर इन विषयों को जाने तब उनको छुड़ाने को प्रयत्न करेगा ।

अज्ञानी लोग तीन प्रकार के होते हैं।

1.अज्ञु । 2.अश्रद्ध ध्यानी। 3.संदेहात्मकों ।

यह सभी अज्ञानता में रहने वाले ही हैं।

1. अज्ञु :-

अज्ञु का मतलब कुछ भी वेदों, या धर्म शास्त्रों को, नहीं जानता है, न जानने का कोशिश करता है। उनको भगवान कौन है? खुद कौन है? यह विषय मालूम नहीं है। उनको ना जीवन का लक्ष्य पता ना उनका अंतिम स्थान पता है। वह आध्यात्मिकता में रुचि नहीं रखता है, ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता है। अगर सदगुरु उनको दिख भी जाएं वह उनका पहचान नहीं पाएंगे। अज्ञु का मतलब अज्ञानता में रहने वाला, जन्म और मरण के चक्र में बंदी हुआ है।

2.अश्रद्ध ध्यानी :-

उनको गुरु के ऊपर भरोसा नहीं है, शास्त्रों को पढ़ते हैं, सद्गुरु का बोधों को आचरण करने को और ध्यान करने को इच्छुक नहीं रखता है। विग्रह आराधना करते हैं, और जीव हिंसा कर कर मांसाहार भी खाते हैं।

वह समझते हैं कि उनको सब कुछ मालूम है। उनको सत्य का

अवगाहन नहीं रहता है। ध्यान साधना नहीं कर सकते हैं।

उपनिषदों में आत्मा ही भगवान है, आत्मा ही महान है का कहने पर भी, न पढ़ने से, ना किसी को कहने पर भी समझ नहीं सकते हैं और अज्ञानता में ही रहते हैं। इसलिए अश्रद्ध ध्यानी लोग साधना पर दृष्टि नहीं रखते हैं। भगवान को इष्ट कहते हैं लेकिन पूजा करना नहीं छोड़ते हैं। उनको सद्गुरु के प्रति भरोसा, और विश्वास नहीं होता है।

3. संशयात्मकों :-

इन लोगों को शास्त्रों के प्रति और सबके प्रति संशय में रहते हैं। पढ़ते हैं, सुनते हैं, लेकिन हासिल करेंगे कि नहीं? यह संशय में रहते हैं।

यह लोग ध्यान में आए हैं फिर भी वह गुरु को भरोसा नहीं करते हैं, कहने पर भी सुनते नहीं है। अगर पूजा छोड़ेंगे तो कैसे? घर में कुछ अमंगल हो जाएगा तो नहीं, करके संदेह में रहते हैं।

उनको सही अवगाहन नहीं रहता है, पूर्व जन्मों का संस्कारों और वासनाएं उन्हें आगे बढ़ना नहीं देते हैं। यह लोग पूजा करते हैं, ध्यान भी करते हैं। मतलब दोनों नैया में पैर लगाकर चलते हैं।

इसी प्रकार अगर सदगुरु कहेंगे कि असली मार्ग भगवान को पहुंचाने का ध्यान ही है, तभी समझ नहीं पाते हैं। ऐसे संशयात्मकों गुरु को ही अनुमान करते हैं।

जबकि पढ़ते हैं, सुनते हैं, सभी पर संदेह रहते हैं। इस संशयात्मकों कर्तव्य को पालन नहीं कर सकता है।

पूर्व दिनों में लकड़ी का चूल्हा पर खाना बनाते थे। अभी गैस का चूल्हा पर बनाते हैं। पूर्व में मोबाइल्स नहीं थे, अब हर एक हाथ में मोबाइल है। यह सब में बदलाव ला रहे हैं लेकिन आध्यात्मिक मार्ग में बदलाव के लिए संशयात्मकों ही रहते हैं ।

ऐसे लोगों को आत्मा के बारे में, और परमात्मा के बारे में अच्छी तरह अध्ययन नहीं करने तक, उनके संदेहों दूर नहीं होंगे । जो कुछ भी हो, अगर गुरु के पास स्थिर नहीं रह सकते हो, वह कुछ भी सीख नहीं पाएंगे। इस संदेह के स्थिति से बाहर निकलने से ही अज्ञानता दूर होगा।

अज्ञु ना जानकर अज्ञानता में रहता है, अगर जान गया तब वह जरूर

ज्ञानी बनेगा।

इसी प्रकार अश्रद्ध ध्यानी गुरु को आश्रय करने पर उनको पास ध्यान साधना करने से ज्ञान प्राप्त करता है। संशयात्मक लोग भी अगर गुरु का बोध को आचरण में लेगा, वह भी ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

अगर जानना है कि अन्न पका हुआ है या नहीं, तो पूरे अन्न को देखने का जरूरत नहीं है, एक अन्न का कण को पकड़ने से पता लगेगा। इसी प्रकार भीमावरम आत्मज्ञान शिविर में एक बार भाग लेने से किसी को भी पूरा समझ में आएगा।

देखिए एक बांस को अपनी लंबाई के निर्भरता पर ही उसकी कीमत रहता है, एक गन्ने का मोटापन का निर्भरता पर ही उनका रस ज्यादा आएगा तभी उनका कीमत होता है, दूध को अपनी अंदर का मक्खन का निर्भरता पर ही उनका कीमत रहता है। इसी प्रकार एक मनुष्य अपना ज्ञान का निर्भरता पर ही उनका महत्व रहता है। सृष्टि में हर एक चीज को अपने-अपने प्रकार कीमत रहता है। यह जानना चाहिए।

मानव लोग धन, पदों , प्रतिष्ठा महान समझते हैं, लेकिन यह सब तत्कालीन है! तत्कालीन, जो शाश्वत नहीं है, वह महान कैसे होगा? यह जानना है कि शाश्वत का ज्ञान ही महान और कीमती भी ही है ।

इसीलिए ज्ञानी को सब लोग गौरव करते हैं। यानी विवेकानंद जी, श्री रामकृष्ण परमहंस जी, श्री रमण महर्षि भगवान, जैसे लोगों को धन संपत्ति कुछ भी नहीं थे, फिर भी उन्हें महान लोग कहलाते हैं, गौरव करते हैं, उनके बोधों को आचरण करते हैं।

इसीलिए मनुष्य को सिर्फ ज्ञान ही शोभा और कीर्ति देते हैं। ज्ञानी लोगों को प्रेम तत्व में रहकर, सत्य के प्रति आशक्ति रहता है, सत्य ही बोलते हैं और सत्य में ही जीते हैं।

इसीलिए ज्ञान का महत्व जानिए, अज्ञानता में नहीं रहना है, ज्ञानी बनने का कोशिश करिए। 'अज्ञानता में पैदा होना गलत नहीं है। अज्ञानता में मरना ही गलत है', कहते हैं महात्मा लोग।

इसलिए अज्ञानता को निकालो, 'श्वास पर ध्यास' रखकर ध्यान कीजिए।

श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1)	आत्म शास्त्र ।	Rs.200/-
2)	ध्यान विद्या ।	Rs.160/-
3)	भगवद् गीता का सार ।	Rs.160/-
4)	एक और जन्म ।	Rs.160/-
5)	सत्य मार्ग ।	Rs.160/-
6)	‘गाइडिंग’ ध्यान क्यों नहीं ?	Rs.120/-
7)	भगवान कौन हैं।	Rs.120/-
8)	कर्म सिद्धांत ।	Rs.120/-
9)	विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ	Rs.120/-
10)	मरने से पहले मरना है।	Rs.130/-
11)	ब्रह्म ज्ञान।	Rs.100/-
12)	यह जीवन क्यों हैं ?	Rs.100/-
13)	मेहर बाबा का संदेश।	Rs.100/-
14)	मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।	Rs.80/-
15)	भागवत के दृश्यों का अर्थ	Rs.80/-
16)	ज्ञान माला	Rs.70/-
17)	श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरुओं।	Rs.70/-
18)	दुख निवारण का मार्ग	Rs.75/-
19)	आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ?	Rs.60/-
20)	निर्वाण मार्ग	Rs.60/-
21)	सत्य	Rs.50/-
22)	क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं?	Rs.50/-
23)	गुरु को पहचानना कैसे ?	Rs.50/-

For Books Please Contact :

TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

श्री दत्तात्रेय जी ने प्रकृति से 24 विषयों को गुरु चुने हैं। उन्होंने उन गुरुओं से सीख कर एक ज्ञान भंडार हो गया था।

यदु महाराज उनको देखकर कहते हैं स्वामी जी आप बहुत आनंद स्वरूप दिख रहे हैं, एक ज्ञान का भंडार जैसे दिख रहे हैं। इस आनंद और ज्ञान आप कैसे प्राप्त किए हैं? आपको ना तो संसार है ना पत्नी या पुत्रों नहीं है, ऐसे नहीं दिख रहे हैं। लेकिन आप इतना आनंद स्वरूप कैसे दिख रहे हैं? करके श्री दत्तात्रेय जी से पूछते हैं।

तब श्री दत्तात्रेय जी कहते हैं कि मैंने बड़ों से और योगियों से नहीं, प्रकृति में से बहुत कुछ मैंने सीखा हूं। इसीलिए श्री दत्तात्रेय जी जैसे बनना है तो, प्रकृति में से बहुत कुछ विषयों को गुरुओं चुनकर, उनसे बहुत ज्ञान प्राप्त करना चाहिए ।

- श्रीमति तटवर्ति राज्यलक्ष्मी

Rs.70/-